श्री कृष्णाय नमः

श्री गोपीजन वल्लभाय नमः

अथ श्री गोस्वामी गोकुलनाथजी कृत

रहस्य भावना

१. स्मरण भक्ति

प्रातःकाल वैष्णवन कूँ श्री ठाकुरजी की सेवा को चिंतन करनो । श्री ठाकुरजी के रात्रि के शयन पीछे के वियोग को विचार करनो । श्री ठाकुरजी के दर्शन की आरति करनी । पाछे दास्य धर्म रूप माला को दर्शन करनो । वाके दर्शन सूँ सेवा में भगवद्भाव उत्पन्न होय । मैं श्री प्रभु को दास हूँ या प्रकार को स्मरण बन्यो रहे । पाछें श्री महाप्रभुजी को तथा श्री स्वामिनीजी को स्मरण करि नमस्कार करनो । जातें सेवा को अधिकार और दीनता प्राप्त होय । पाछें श्री गुसाँईजी और आपके वंश को स्मरण करनो । श्री महाप्रभुजी को वंश सब अलौकिक जाननो नाम और ब्रह्म सम्बन्ध दाता गुरु को स्मरण करनो । पाछें उनकों नमन करनो ।

२. प्रातःकृत्य, नित्य विधि

देह कृत्य करिकें पाछे दंत-धावन करनो । मुख शुद्धयर्थ बीडी खानी । मुख की बास मिटे । पाछें तेल मर्दन करिके स्नान करनो व्रत के दिन बीड़ी खानी नहीं । द्वादशी कों तेल न लगानो लघुशंका करिके चार, छीवे जावे आठ, भोजनान्ते बारह और विषमान्ते सोलह कुल्ला करने पाछे चरणामृत लेकें भगवन्नाम लेनो । शरीर आछी रीति से पोंछि अपरस वस्त्र पहरि तिलक मुद्रा धारण करने । सेवा को समय भयो होय तो मुद्रा पीछे करनी । मन्दिर के द्वार पास आय दण्डवत करने ।

३. सेवा की विधि

प्रथम भगवन्मन्दिर कों नमन करिकै यह श्लोक बोलनो –

"भगवद् धाम भगवन् नमस्तेऽलंकरोमि तत् ।
अंगीकुरु हरेरपे क्षांत्या पादोप मर्दनम् ।।"

पाछें भगवन्मंदिर की क्षमा मांगि माहात्म्य भाव तें नन्द, सुनन्द आदि द्वारपाल कौ स्मरन करनो । वाल भाव होय तो श्री यशोदाजी, श्री रोहिनीजी सखा, गोप गोपी आदि जो दर्शन कों आये हैं ऐसी भावना करि उनकं स्मरण करनो । और निकुंज लीला कौ होय तो ललिता विशाखा आदि सखीजनन कौ स्मरण करनो । पाछें नमन

करनो । पाछे मनमें विनती करनी जो –

"मैं श्री आचार्यजी को दास (दासी) हूँ । श्री आचार्यजी श्री गुँसाईंजी की ओर देखिकै उनकी कानि तें अपनी संग सेवा में राखो । तुम्हारी कृपा ते प्रभु मोकों दर्शन दे ऐसी आप प्रार्थना करो ।"

४. मन्दिर के किंवारन की भावना

मन्दिर के दो किंवार श्री स्वामिनीजी के दो नेत्रन के पलक हैं । श्री स्वामिनीजी पलकें खोलें हैं तब श्री ठाकुरजी की झाँकी होय है ।

५. निज मन्दिर की भावना

मन्दिर अक्षर ब्रह्म है, माहात्म्य में । बाल लीला में श्री नंदालय, रहस्य निकुंज भावना में श्री स्वामिनीजी की निकुंज है, वृन्दावन में तहाँ श्री ठाकुरजी युगल स्वरूप सहित पोढे हैं । अथवा श्री आचार्यजी और सब भक्तन के हृदय हैं तहाँ श्री प्रभुजी 'निरोधात्मा' (नमामि हृदये शेषे या प्रकार) होय के सदा विराजमान हैं, अनेक स्वामिनी सहित यह भाव विचारनो ।

६. घंटा नाद की भावना

पाछे खासा शुद्ध मृतिका और जल तें हाथ धोने । ता पाछे घंटानाद करने । ब्रज में सात्विक, राजस और तामसी तीन प्रकार की गाय हैं । उनके कंठ घण्टा बंधे रहत हैं ।

सो अपने वच्छन कों रात्रि के भूखे जान पस्तक हिलाय के घंटा बजावें हैं । सो श्री ठाकुरजी को सूचन करें हैं जो आप जागिकै हमको खूंटान तें खोलो । यह ब्रज को भाव नंदालय में तीन प्रकार की राजसी, तामसी, सात्विकी गोपी हैं । वे अपने कबु कंठ ते मधुर स्वर और बानी तें प्रभु को जगावे हैं रहस्यलीला में मैना, सुआ आदि पक्षी जो श्री स्वामिनीजी की निकुंज में पिंजरान में हैं वे समय जानि बोल कै जगावे हैं । तमचर के प्रसंग करिजीरे डरपि के जगावे हैं । (तमचर को प्रसंग रामानन्द की वार्ता के भाव में है) सो ललिता विशाखा के कंठ की समान बोलि के जगावे हैं । मधुर स्वरन ते । ता समें ललिता सखीजन बीन बजावें हैं ।

७. शंखनाद की भावना

रहस्य लीला में राजसी, तामसी, सात्विक गोपीजन तीन बार शंखनाद करत हैं । वैष्णवों के यहाँ शंखनाद नहीं होय । उनको अधिकार नहीं या भाव को । सखीजनन को दूसरो भाव पुरुष को हू है सो अष्टसखा सुबल, श्रीदामा आदि नन्दरायजी के यहाँ जाय के शंख बजाय श्री स्वामिनीजी के कंठनाद की सुरत करावें हैं ।

८. सिंहासन की भावना

पाछे हाथ खासा कर मन्दिर में जाय शैया भोग को

वटा माला, बीरा, झारी, ये सब बाहर लायके प्रसादी पात्र में ठलावने । पाछे मन्दिर में जाय सोहनी (पुहारी) करिकें भूमि पर गीलो वस्त्र फिराय पाछे सूको वस्त्र फिरावनो । ता पाछे सिंहासन झटक कर सभारनो । सिंहासन महात्म्य में अक्षर ब्रह्म को मध्याकाश है । नंदालय में श्री यशोदा की गोदि है । और रहस्य भाव में श्री स्वामिनीजी की गोदि है । कटि रूप सिंह को आसन है । पीछे को तकिया हृदय है आस पास के तकिया दोनों भुजा हैं । निकुन्ज में श्रीस्वामिनीजी तें श्रीचन्द्रावलीजी और उनतें ललिताजी प्रगटी हैं तातें उनके भाव रूप जाननो नंदालय में श्रीस्वामिनीजी कुमारिका के मध्यनायक श्रीराधा सहचरी रूप तें सेवा को अनुभव करत हैं । ताते उनके रूप भी जानने ।

९. सिंहासन के वस्त्र की भावना

उत्तरिय वस्त्र रूप हैं । सिंहासन के कलश कुच रूप हैं । (बीच को कलश मस्तक रूप है) जेमिनी ओर के तकिया पर मुखवस्त्र धरनो । सों लहेंगा स्वरूप जाननो अथवा अचल रूप जाननों ।

१०. मन्दिर वस्त्र की भावना

जल छिरक के मन्दिर वस्त्र करनो सो तीन प्रकार के ताप निवृत्त होय हैं भक्त हृदय के । रहस्य भाव में

अधरामृत सिंचन है । और श्री ठाकुरजी के चरण कमल के कुमकुम तें ललितादि सखीजनन के ताप दूर होय हैं । सीतलता होय हैं ।

११. झारी की भावना

वात्सल्य भाव में झारी श्रीयशोदा स्वरूप हैं । झारी नित्य माँजनी । सो देह कृत्य करि नित्य स्नान की भावना है । पाछे खासा को शुद्ध-पवित्र जल भरि कै श्री ठाकुरजी के वामभाग धरनी । झारी ऊपर लाल वस्त्र ढाँपनो सो झारी की टोंटी श्री यशोदाजी के स्तन रूप हैं । झारी रूप श्री यशोदा लाल वस्त्र रूपी साड़ी पहरि टोंटी रूप स्तन तें अपने बालक को स्तन पान करावें हैं या प्रकार की भावना करनी । निकुंज में श्रीयमुनाजी को भाव है मुख्य रहस्य भाव में स्वामिनी है । सो वाम अंग विराजें हैं । सौभाग्यवती लाल वस्त्र झारी पे आवे । झारी कुमारिका के भाव रूप भी हैं । जाके जैसो भाव होय वैसी भावना करें । श्री यमुनाजी को भाव सब में जाननो ।

१२. मंगल भोग की भावना

मंगल भोग धरें तामें एक कटोरी में ओट्यो दूध, केसर, बरास, सुगंध मिल्यो भयो, एक कटोरी में दही, एक में संधानो, एक में मलाई, एक में माखन, तथा एक में पिसी भई मिश्री और एक में बालभोग के लाडु आदि नई

सामग्री नित्य फिरती करनी । वाकों साजि के धाँप रखनो ।

१३. श्री ठाकुरजी के जगावे की भावना

श्री आचार्यजी महाप्रभु श्री ठाकुरजी के मुखारविन्द स्वरूप हैं । तातें जहाँ श्रीमहाप्रभुजी के पादुकाजी आदि अलग न विराजते होंय वहाँ श्री ठाकुरजी के मुखारविन्द के दर्शन करके श्री आचार्यजी को स्मरण करनो । पाछे शीतकाल होंय तो गरम करी भई रजाई श्री ठाकुरजी कों जगाय के ओढावनी । युगल स्वरूप होंय तो सिंहासन पर दोनों स्वरूपन कों एक पधरावने और रजाई ओढानी । क्यों जो प्रातः काल को वियोग क्षण हूँ सहन न होय । वा समें रसोइया को दर्शन करावने और कों मंगल भोग के दर्शन को अधिकार नहीं ।

१४. मंगल भोग धरवे की भावना

मंगल भोग धरते समय वात्सल्य भाव हृदय में रखनो । वात्सल्य भाव में श्री ठाकुरजी के आगे राखी भई चौकी (मंगल भोग की) सो श्री रोहिनीजी को स्वरूप । सोना की कटोरी श्री स्वामिनी को रस पात्र है । चाँदी को पात्र श्री चन्द्रावलीजी को भाव । पीतल के पात्र में सोना की भावना करनी और जसत में चाँदी की । श्रीस्वामिनी रस रूप पात्र है उनमें कुमारिका की भावना करनी । श्री यमुनाजी सब में हैं । बड़ो कटोरा श्री चन्द्रावलीजी को श्री

हस्त जाननो । या प्रकार मंगल भोग धरिकै श्री आचार्यजी तथा श्री गुसाँईजी और तद्भाव उत्पन्न अपने ब्रह्मसम्बन्ध दाता गुरु एवं अष्टसखा आदि की कांनि देनीं । उनकी कांनि तें आप आरोगे । पाछे टेरा दे बाहर आनो ।

१५. टेरा की भावना

टेरा है सो माया रूप है । एक अविद्या रूप एक विद्या रूप । अविद्या रूप माया धर्म में मन लगावे नहीं दे, दूसरी विद्या रूप भगवत्सेवा स्वरूप है । सामग्री धरते समय जो टेरा करत हैं सो विद्या रूप माया है । सामग्री स्वरूपात्मक है । और वाको भोग भगवान् करत हैं । भोग एकान्त बिना होय नहीं ताते टेरा आवत हैं । सो माया रूपी टेरा तें भक्त जनन कौं मनोरथ सिद्ध होय है ।

वात्सल्य भाव तें टेरा करिवे तें कोई की दृष्टि लगे नहीं । कुमारिका के भाव में श्रीस्वामिनीजी पधारें हैं, उनके साथ श्री ठाकुरजी को बाल भाव तें श्री यशोदाजी बैठारि के मंगल भोग धरें हैं वा समय रहस्य लीला को गुप्त रखिवे के लिए माया रूप टेरा आवे हैं । या भावना ते मंगल भोग धरनो ।

१६. शैय्या की भावना

पाछें शैय्या मन्दिर में जाय कै शैय्या उठाय सोहनी करनी । मन्दिर वस्त्र करनो गीलो । शैय्या के कसना

खोलि के झार के गादी बिछाय कसना बाँधने । कार्तिक सुदी ११ तें (प्रबोधिनी) रामनवमी तक कसना नहीं बांधने शीत के कारन । उष्णकाल में रामनवमी तें प्रबोधिनी तक बँधे ।

शैय्या भक्त को स्वरूप है । शैय्या के ऊपर वस्त्र भक्त को हृदय है । आसपास के तकिया भक्त के दोऊ हस्त हैं ।

शीत प्रभु के श्री अंग में रहे हैं, और शैय्या रूप भक्त के हृदय के ताप विरह रहे हैं । जातें शीतकाल में शैय्या के पास कस्तूरी, जायफल, लौंग आदि गरम सामग्री आवे हैं । इन सामग्रीन तें भक्त अपने हृदय को भाव जनावे हैं । और सोभाग्य सूंठ की सामग्री हु धरे हैं । सो प्रभु वाको भोग करें हैं ।

शैय्या के चार पाये चार यूथाधिपति भाव रूप हैं । चार पाये चार पाटी, चार तकिया प्रभुन के चारों ओर हैं । वाम भाग के श्रीस्वामिनीजी के भाव रूप और जैमिनी भाग ओर श्री चन्द्रावली के भाव रूप जानने । सिरहाने की ओर श्री यमुनाजी के भाव रूप चरनारविन्द की ओर ललिताजी को भाव जानवो ।

१७. शैय्या के वस्त्रों की भावना

गेंदुआ कपोल के भावतें हैं । वाके पास गलीचा बिछे सो सब सखीन के भाव तें । पाछे शैया को चादर ओढ़ाय के बाहर आवनो ।

पाछे श्रृंगार को साज ऋतु समय के अनुसार निकासनो । शीतकाल में रुई के गद्दल वागा कोमल तकिया आवे । वे सब श्रीस्वामिनी के उदर के भाव रूप हैं । प्रभु पुष्टि स्वरूप तें बिराजें हैं ताते श्रीस्वामिनीजी कों सुख होय है । बागा के ऊपर पीलो पाट श्रीस्वामिनी के भाव तें । सफेद श्री चन्द्रावलीजी के भावतें । लाल कुमारिकान के भाव तें । स्याम श्रीयमुनाजी के भाव तें । या प्रकार अनेक रंग के श्रीस्वामिनीन के भाव तें धरें हैं ।

श्री ठाकुरजी के बागा को घेरा सो श्रीस्वामिनीजी के लहेंगा रूप हैं । सूथन श्रीस्वामिनी की चोली रूप हैं, (लम्बे पूरे श्रीहस्त की) श्री ठाकुरजी को उपरना श्री स्वामिनीजी की साड़ी है ।

जरी के बागे

आसोज सुदी १० विजय दशमी ते कार्तिक सुधी १ तक धरने । कार्तिक वदी ११ (गुर्जर आसोज वदी ११) कों स्याम जरी के बागा श्री यमुनाजी के भावतें । कार्तिक वदी १२ कों पीरी जरी के बागा । श्री स्वामिनीजी के भाव तें । कार्तिक वदी १३ कों हरी जरी को बागा सोलह हजार कुमारिकान के भावते । कार्तिक वदी ३० को सफेद जरी की बागा निर्गुण भक्तन के भावतें धरने ।

शीतकाल में सब भक्तन कों गाढावलंबन होय है याते शैय्या के ऊपर सिहराने में दो कस्तूरी की थैली श्री

यमुनाजी के भावतें आवें । जहाँ श्री यमुनाजी होंय वहाँ ईर्ष्या द्वेष आदि नहीं रहे । सब भक्तन को भाव रस रूप होय जाय ।

शीतकाल में अँगीठी भक्तन के विरह ताप के सुखनार्थ श्री ठाकुरजी के सन्मुख रहे ।

अक्षय तृतीया तें

पाग पिछोरा धरने । श्रीनवनीतप्रियजी ओढनी धरें । यातें भक्तजनन कों भाव प्रगटे हैं । विरह की शान्ति अर्थ ता दिन तें पंखा, चंदन अर्गजा धरें । या प्रकार ऋतु -समय अनुसार तैयारी करिके मंगल भोग सराने ।

१८. आचमन तथा बीडी की भावना

आचमन की झारी श्रीयमुनाजी स्वरूप हैं । तष्टि (झारी के नीचे की तबकडी) श्री ललिता स्वरूप है । दोनों स्वरूप के मुख के प्रसादी जल कों पान भक्त करे हैं मुखवस्त्र सो तो उत्तरिय (ऊपर ओढ़ने वाला) वस्त्र हैं । पान की बीरी श्रीस्वामिनीजी को चर्वित है । सो आरोगें हैं । पाछें प्रसादी जल की झारी खाली करिकै मंगला आरती करनी ।

१९. मंगला आरती की भावना

गरमी में चार बाती की आरती होंय शीतकाल में सोलह बाती होंय । आरती भक्तन के हृदय को विरह है

सो प्रभु पर न्योछावर करत हैं । श्रीयशोदा के भावतें पुत्र की रक्षा के लिये मातु चरण बलिहारी लेति हैं । आरती करि दण्डवत प्रणाम करि प्रसादी हाथ धोय शृंगार करने ।

२०. अभ्यंग और स्नान की भावना

थारी में चौकी बिछानी तामें चार तैह को वस्त्र बिछामनो । उत्सव होय तो अभ्यंग को साज निकट रखिए । पाछे श्री अंग को शृंगार बड़ो करनो । ठाड़े स्वरूप को तनिया रहे । पाछे स्नान करावनो । श्री नवनीत प्रियाजी को वस्त्र न रहे । नंदरायजी के भावतें । ठाडे स्वरूप को वस्त्र रहे । थारी ललिता स्वरूप । चौकी चन्द्रावली रूप । वस्त्र श्रीस्वामिनी रूप । श्याम स्वरूप को नित्य फुलेल लगाय स्नान करामनो । श्री नवनीत प्रियाजी को केसरी चन्दन में रंच फुलेल तेल पधराय, कै स्नान करामनो । आमले को भींजाइ कै वस्त्र ते छान आमला के जल में थोरी हलदी थोरी सूकी तुलसी तथा थोरो फुलेल पधराय कै अपराध न होय ऐसो मन में भय राखिकें श्री ठाकुरजी को स्नान करामनो । आमले श्रीयमुनाजी को भाव तुलसी कुमारिका को भाव, हलदी अभ्यग तें अलौकिक ब्याह की सूचना करें हैं । कोई विरह की सूचना हू कहें है । वो हल्दी श्री स्वामिनीजी के श्रीअंग को रंग है । फुलेल श्री स्वामिनीजी को स्नेह है । जल श्री चन्द्रावलीजी

रूप श्री स्वामिनीजी के हृदय को विरह है। ऐसी भावना कर श्री ठाकुरजी कों स्नान करामनो। जल श्री यमुनाजी को रूप ह् है। स्नान के लोटा में थोरो जल रहे वाकों श्री ठाकुरजी के ऊपर फेरिके थारी में करि देनो। फेरि दर्शन करने। श्री ठाकुरजी के सर्वांग दर्शन करिवे ते दृष्टि दोष भयो होय वह लोटा को श्री ठाकुरजी के ऊपर फिरायवे तें दूर होय है।

२१. शृंगार की भावना

पाछें श्री ठाकुरजी के अंग वस्त्र करनो। फिर स्याम स्वरूप होय तो धोवा समर्पनो और गौर स्वरूप होय तो अतर समर्पनो। चोवा श्री यमुनाजी के भाव तें हैं। बड़े स्वरूप कों तनिया धरावनो।

श्री नवनीतप्रियजी कों शीतकाल में रुई को बागा, गद्दल, उष्णकाल में ओढनी धरनी। अलंकार धरते होंय तो अलंकार धरिये अंजन धरावते हों तो अंजन धरनो। अंजन में काजर, घी, बरास है सो श्री यमुनाजी काजर रूप हैं, घी श्री स्वामिनीजी को स्नेह है और बरास श्री चन्द्रावलीजी के भाव रूप हैं पाछे चरनारविन्द में नूपुर श्रीस्वामिनीजी धरावें हैं और नन्दालय में श्री यशोदाजी वात्सल्य रस के आधिक्य तें धरावें हैं या प्रकार भावना करनी।

याही प्रकार श्री यशोदाजी के घर में श्री स्वामिनी के भाव तें कुमारिका श्रृंगार धरावें है और निकुंज में श्री स्वामिनीजी अपने श्रीहस्त सों श्रृंगार करें हैं । श्री स्वामिनीजी को श्रृंगार श्रुतिरूपा-श्री चन्द्रावलीजी अपने हाथ सों करें हैं ।

श्रृंगार में दो भाव हैं -- १. रीति और २. विपरीत । रीति को श्रृंगार मर्यादा तें होय और विपरीत पुष्टिप्रकार तें । रीति को श्रृंगार सिखातें नख पर्यन्त धरायो जाय और विपरीत नखतें सिखा पर्यन्त । निकुंज में श्री स्वामिनीजी नखतें सिखा पर्यन्त श्रृंगार करें हैं ।

नूपुर पाछें जेहर धरावनो । नूपुर श्री स्वामिनीजी के भाव रूप हैं । जेहर श्री यमुनाजी के भाव रूप सुवर्ण श्री स्वामिनीजी के भावरूप, चाँदी श्री चन्द्रावलीजी के भावरूप और हीरा श्री कुमारिका के भावरूप जानने । पाछें पीतांबर धरामनो ऊपर क्षुद्रघंटिका । सो रासविहार आदि में रस उद्दीपन करे हैं । पाछे वैजयंति ग्रीवा तें कटि ताँई आवे ।

अब नौ प्रकार के भक्तन के भावतें सोना के मनिका की माला आवे । प्रतिमनिका के साथ एक एक मणि पोये होंय, ऐसी माला धरावनो । सो 'साधन सिद्धा' और 'नित्य सिद्धा' के भावतें । वा पर ऊज्ज्वल गजमोती की माला श्रीचन्द्रावलीजी के भावतें आवें । वा पर सोने की साँकल हृदय पर धरें सो श्री स्वामिनीजी ने स्नेह को फंदा श्री

ठाकुरजी के ऊपर डार अपने वश करि लीने हैं । या भावतें आवें । बीच में चौकी आवें सो स्वामिनी के हृदय रूप और हीरा की रत्न जटित धुग धुगी सो श्री चन्द्रावलीजी के भाव रूप । पाछें पछेली, छत्र के चिह्न की भावना करनी वह आधिदैविक लक्ष्मी रूप स्वामिनी हे उनकों श्री ठाकुरजी ने हृदय में छिपाय रखें हैं और कंठ में कौस्तुभमनि की भावना करनी । वह कोटि-कोटि स्वामिनी के हृदय रूप हैं । पाछें कंठ में सोना की हंसुली धरें सो श्रीस्वामिनीजी के श्रीहस्त की गलबाँही को भाव जाननो । वा हँसुली में चित्र विचित्र नक्कासी है वह श्री स्वामिनीजी के हस्त के आभूषण जानने । हँसुली की दो नोंक मुरी हैं, वह नख को भाव है । पाछें तीन लर, पाँचलर, सातलर, नौलर, तेरहलर और एक इक्कीस लरिकी माला धारण करें हैं । तीन लरिकी माला है वह राजस-तामस सात्विक भक्तन के भाव रूप । पांचलरि की माला में श्रीस्वामिनीजी, श्रीयमुनाजी श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीकुमारिका और सब स्वामिनीन के भाव रूप जाननी । सात लरि की माला में चार यूथाधिपति और तीन राजस, तामस, सात्विक भक्त के भाव जानने । नव लरि की माला में नव प्रकार के (सात्विक, राजस, तामस के तीन तीन प्रकार के) भक्तन को भाव जाननो । तेरह लरि की माला में भक्तन के एकादश इन्द्रिय के अंग और दो नित्य सिद्धा

के स्वरूप के अंग और दो नित्य सिद्धा के स्वरूप के भाव जानने । एकईस लरिकी माला में दस प्रकार के भक्त (नौ सगुण एक निर्गुण) श्रुतिरूपा के यूथ के और नो प्रकार के कुमारिका के यूथ के तथा श्री स्वामिनीजी और श्री यमुनाजी के भाव जाननो । कंठ ते चरणारविन्द ताँई ये सब मालाएँ आवें तापर वनमाला आवें । सो तुलसी तथा अनेक वनस्पति की होंय । सो व्रज की समस्त स्वामिनी श्री यमुनाजी, सखी, सहचरी और सब दूतिन के भाव रूप हैं । सो श्री ठाकुरजी भ्रमर रूप होंय वनमाला पर सब भक्तन के रस को अनुभव करत हैं । कभी अकेली तुलसी की माला हू धारन करें हैं तब श्री स्वामिनीजी के श्रीअंग की सुगन्ध को अनुभव करें हैं ।

'प्रियागंध तुलसी' इत्यादि ।

कोई समे श्री ठाकुरजी कमल की माला हू धारण करें हैं । सो श्री स्वामिनीजी के हृदय के भाव रूप हैं ।

२२. श्रीठाकुरजी के फूलन के शृंगार को भाव

कोई दिन पीरी चमेलीन की माला धारण करें, तब श्री स्वामिनीजी के श्रीअंग के वरण को भाव विचारनो । सुफेद चमेली की माला श्रीचन्द्रावलीजी के श्री अंग को भाव । मोगरान की माला श्रीचन्द्रावलीजी की दंतावली को भाव चंपा की माला श्री कुमारिका को भाव । गुलाब के

फूलन की माला में श्री स्वामिनीजी के हास्य तें फूल झरें ऐसो भाव विचारनो । कोयल श्री यमुनाजी की और पाडर श्री स्वामिनीजी की नासिका के भाव रूप । कदंब श्रीकुमारिका के भाव रूप इत्यादि भाव विचार के माला धरामनी ।

२१. श्रीठाकुरजी के दोनों श्रीहस्त के शृंगार कौ भाव

श्री ठाकुरजी के दोनों श्रीहस्त की दस अंगुलीन में दस मुद्रिका धारण होय सो दस प्रकार के भक्त रूप हैं । स्नेह के बस होकर भक्तन कों धारण कर रखे हैं । जब श्री ठाकुरजी वेणु बजावें हैं तब उन मुद्रिका रूप भक्तन कौ श्री ठाकुरजी के कपोल पर स्पर्श होय हैं । यासूं युगलगीत में कहत हैं

"वामबाहु कृत वाम कपोलो" दस अंगुलिन के दस नख हैं सो चन्द्र रूप हैं । सो दस नखचन्द्र के प्रकाश तें भक्तन के हृदय में रही असद्‌वासना रूप अन्धकार को नास होय है । हृदय में प्रकाश और शीतलता होय हैं । पाछें दोनों श्रीहस्त में कंकन धरें हैं । सो श्रीस्वामिनीजी ने ब्याह के समय अपने कंकन पहराए हैं जडाउ के । वाके पास पहोंची हैं, सो श्री चन्द्रावलीजी ने अपने ब्याह के भावतें श्री ठाकुरजी को पहराई है । फेरि सोना के कडे हैं । सो कुमारिकान ने अपने ब्याह के भावतें पहराये हैं । सो कुमारिकान के रसके बंधनरूप हैं ।

२४. मुरली की भावना

श्री ठाकुरजी श्री हस्त में मुरली धरें हैं सो श्री स्वामिनीजी के सुरतें मुरली द्वारा अपनों सुर मिलावे हैं। यातें मुरली परम प्रिय है और मुरली के सात रंध्र हैं सो मुख्य रंध्रतें श्री स्वामिनीजी श्री ठाकुरजी को सुधा को पान करे हैं अन्य छह रंध्रतें श्री चन्द्रावलीजी, श्री कुमारि का, गाय, गोवर्धन, पशु-पक्षी और देवतान कों सुधा को दान होय है। वृक्षलता औषधि आदि कों भी दान है।

वेणु भीतर तें पोलो है सो लौकिक वैदिक वासना करि कै रहित है। और 'सुधा' श्रीमहाप्रभुजी स्वरूप हैं तथा वेणु श्रीगुसाँईजी के भाव रूप हैं सातरंध्र सात बालकन के भाव रूप। इन करि सारो व्रज भगवदीय होय है।

२५. वेत्र की भावना

वेत्र (लष्टिका) श्री यमुनाजी रूप हैं। सो पुष्टिमार्ग के विधाता ब्रह्मा हैं।

२६. चिबुक के आभूषण की भावना

चिबुक के आभरण श्री चन्द्रावलीजी रूप हैं। सो श्री स्वामिनी और श्री ठाकुरजी के अधरामृत को पान करें हैं।

२७. वेसर की भावना

वेसर श्री स्वामिनीजी तथा श्री चन्द्रावलीजी दोनों

अपने अपने भावतें धरावें हैं । बिंबफल सारिखो श्री ठाकुरजी को अधर है याके रस को पान करिये के लिए श्री स्वामिनीजी के मन रूप सुआ आयके बैठ्यौ है । सो रस-पान करिके रस में मग्न होय घूमि रह्यो है ऐसो वेसर की भाव विचारनो अथवा वेसर में सोना है, सो तामें श्री स्वामिनीजी को भाव विचारे और वामें चुन्नी है । सोहू श्री स्वामिनी रूप हैं । मोती श्री चन्द्रावली रूप हैं ।

२८. तिलक की भावना

केसरी तिलक श्रीस्वामिनीजी के भाव रूप हैं । प्रसादी कुंकुम को तिलक विरह ताप को निवारन करें हैं । कस्तूरी को तिलक श्री यमुनाजी के भाव रूप हैं । जडाऊ तिलक श्रुतिरूपा के भाव रूप । गोरोचन को तिलक सोलह हजार अग्निकुमारिका के भाव रूप । लम्बो तिलक श्रीस्वामिनीजी के चरणारविन्द के आकार की भावना सूं श्री ठाकुरजी धारन करें हैं । सो श्री स्वामिनीजी ने छाप देकै वश कर राखे हैं ।

२९. कुण्डल की भावना

कुण्डल साँख्य योगरूप हैं । अथवा श्री ठाकुरजी मयूराकृत कुण्डल धारण करें हैं । सो मयूराकृत तें तो जैसे मोर मयूरी को रसदान कला करिकें करें हैं वैसे श्री ठाकुरजी निर्विकार रूप तें वाही प्रकार भक्त को रसदान

करत हैं और मीनाकृत मस्त्याकृत कुंडल जैसे मीन मकर जल में रहे हैं ता प्रकार जल रूप रसमय प्रभु हैं, या भाव प्रकट करिवे के लिये धरें हैं ।

३०. अलकावली को भाव

अलकावली श्रीचन्द्रावलीजी के भावरूप हैं ।

३१. पाग और मुकुट की भावना

पाग श्रीयमुनाजी को भाव है । मुकुट श्रीस्वामिनी को भाव है । श्री आचार्यजी स्वयं श्रीस्वामिनीजी रूप हैं सो अपने मोरपंख को मुकुट करके श्री ठाकुरजी को सर्व प्रथम धरायो है । और कुलह श्री चन्द्रावलीजी के भाव सूं धरें हैं । कुलह उत्सव को साज है, यातें उत्सव में आवें । कुलह श्री गुसाँईजी श्री चन्द्रावली रूप हैं । तातें उनके भाव रूप उत्सव के सब शृंगार श्री गुसाँईजी ने प्रकट किये हैं ।

सेहरा को भाव

अग्निकुमारिकान के भावते हैं । वे पहले ऋषि हते सो श्रीरामचन्द्रजी के वरदानतें बंगदेश तें व्रज में आई हैं । ऋषि होयवे के कारण कुमारिकान कों वेद मर्यादा रीति तें विवाह प्रिय है । तातें कात्यायनी व्रत कियो और प्रभुन कों अपने पतिभाव तें माने सो सेहरा विवाह के भाव ते हैं ।

टोपी की भावना

टोपी श्री यशोदाजी के भावतें धारण करें हैं । ग्वाल पगा ग्वालन के भावतें धारण करें हैं । तामसी भक्तन के मान मर्दनार्थ टिपारो धारण करें हैं । राजसी भक्तन के लिये दुमाला और सात्विक भक्तन के लिये फेंटा धारण करें हैं । वेणी श्री स्वामिनीजी के भावरूप हैं । मीना को सिरपेच कुमारिका के भावते हैं ।

सोना की कलगी कुमारिका के भाव स्वरूप हैं । मोर पंख की कलगी श्री स्वामिनीजी के भावतें । तुर्रा श्री यमुनाजी के भावतें टिपारा के दोनों ओर कतरा आये हैं । सो एक वाम भाग को श्री स्वामिनी के भाव ते । यह श्री ठाकुरजी के रक्षणार्थ और जोगनों श्री चन्द्रावलीजी रक्षणार्थ धरावें हैं ।

चन्द्रिका श्री स्वामिनीजी धरावें हैं । तीन चन्द्रिका राजस तामस सात्विक के भावतें । पाँच चन्द्रिका चार यूथाधिपति और समस्त व्रज भक्तन के भावतें चाकदार बागो श्री चन्द्रावलीजी के भावतें ।

३२. श्री स्वामिनीजी के शृंगार की भावना

माँग सँवारि पटिया में सुन्दर फुलेल लगाय सिन्दुर भरें हैं । सो श्री ठाकुरजी के अत्यन्त संकुचित स्नेह जतायवे के अर्थ है फुलेल श्री ठाकुरजी के स्नेह रूप हैं ।

श्री स्वामिनीजी के केश हैं, जिनके आगे छोटी-छोटी घुंघर वाली लटें हैं सो श्री ठाकुरजी अनेक भ्रमर रूप होयके रहें हैं। आप मुख-कमल के पराग की पान करें हैं।

श्री स्वामिनीजी के कपोल पर दोनों ओर लटें हैं। सो कुच उपर आइ रही हैं। सो अत्यन्त शोभा कों प्राप्त होय रही हैं। सो मानो श्री ठाकुरजी के ये दोऊ श्रीहस्त हैं। सो कुच-कलश को अनुभव करत हैं।

श्री स्वामिनीजी की चोटी श्री चन्द्रावलीजी करत हैं, सो फूल गूंथे हैं। सो केश श्री ठाकुरजी रूप हैं। सो युगलस्वरूप को अनुभव होत है। अथवा गूंथे भए फूल श्री चन्द्रावली रूप हैं सो युगल स्वरूप की सेवा करें हैं। कभी जूरे बाँधे हैं। कभी बेनी पीठ पर लटक रही हैं। तातें रीत विपरीत भाव समजनो।

बेनी गूंथी हैं तामें सोना को झब्बा है सो श्री स्वामिनीजी के भाव रूप हैं और स्याम रेसमी पाट की फोंदना श्री ठाकुरजी को स्वरूप हैं। सो श्री स्वामिनीजी के पीठ रूप सोना के स्तम्भ पर रस रूप सुरत हिंडोरे श्री ठाकुरजी झूल रहे हैं यह भाव जाननो श्री स्वामिनीजी की पीठ पर रही भई, बेनी और झब्बा बार-बार चंचल होय रहे हैं। बेनी में चार झब्बा हैं और तामें स्याम रेशम के फोंदना हू चार है। सो चार यूथपति हैं। वह विवाह को

भाव सूचित करें हैं । वेनी में जो फूल गुँथे हैं । सो मानों सब सखीजन यह लीला के दर्शन करत हैं ।

श्री स्वामिनीजी के केश पर वाम भाग में जडाव को शीशफूल धारन किये हैं सो सूर्य रूप हैं । सो दिन की लीला में रस उद्दीपन में सहायक होय हैं । और सूर्य पुत्री श्री यमुनाजी के भाव रूपी भी हैं ।

श्री स्वामिनीजी के दोनों भ्रकुटि रूप धनुष हैं सो कामदेव के मद कों चूर करें हैं और श्री ठाकुरजी के ऐश्वर्य मद कों भी दूर करें हैं । भ्रकुटी की मरोर तें श्री ठाकुरजी त्रिभंगी होय रहे हैं ।

भ्रकुटी के बीच में जटित तिलक है, वाके पास कस्तूरी को स्याम बिन्दु है, और सोना की बिन्दी हू है और मोती शोभायमान है, सो कस्तूरी को बिन्दु श्री ठाकुरजी के भ्रमर स्वरूप हैं । सो मुख-कमल को पान करे हैं । सोना की बिन्दी श्री स्वामिनी रूप हैं सो श्री ठाकुरजी रूपी भ्रमर को शोभायमान करत हैं । मोती श्रीचन्द्रावलीजी के भावतें हैं और जटित बिन्दी श्रीयमुनाजी के भाव रूप जाननो ।

श्री स्वामिनीजी बांकी बिन्दी के बीच में बैना लटकें हैं । सो श्री ठाकुरजी के भाव रूप हैं । वो मधुर रस के भाव कों बढ़ावन हारो है ।

दोनों श्रवण में बांके झूमक सहित कोई बार करन

फूल कोई बार नक फुली आदि धारण करें हैं बांके झुमक श्री यमुनाजी के भाव रूप हैं और नकफूली रूप सोलह हजार कुमारिका हैं, यह अवस्था में श्री स्वामिनीजी सों छोटी हैं, दोऊ नयन कमलन में अरुण स्वेत डोरा तामें अंजन कियो है, सो तामें अनेक प्रकार के भाव हैं, तिनमें कछु कहें हैं, श्वेत डोरा श्रीचन्द्रावलीजी रूप, तथा अरुण डोरा कुमारिका रूप, श्याम पुतरी श्री यमुनाजी रूप, सो तामें अनन्य रूप श्री ठाकुरजी हैं ।

चारों यूथ पतिन के रस को अनुभव करत हैं, सो तहाँ दोऊ करणन में करनफूल हैं, सो ता करिकें व्यापिवैकुण्ठ की लीला और व्रज की दोऊ लीलान को अनुभव अंग अंग में करत हैं तासों रोम रोम पर लुभाय के परवश होय रहे हैं, और सुन्दर नासिका में नकबेसरि तथा सुन्दर नथ विराजमान हैं । सो नथ नाँहीं है, श्री ठाकुरजी मन पक्षी की नाँई चंचल ह्वै रह्यो है । सो सगरे भक्तन के रसपान करन में आप चलायमान हैं, पक्षी के पकरन को कामदेव रूपी जाल बिछाय राख्यो है, सो श्री ठाकुरजी को मन, पक्षी रूप अधरबिंब रसपान करन को आयो । सो नथरूपी जाल में ता रस को भोग करन लाग्यो । तब श्री स्वामिनीजी ने नथ रूपी जाल को चलायमान करिकें श्री ठाकुरजी के मन रूपी पक्षी को बाँधि लियो है । सो मन के बंधत ही देह प्राण, सब बंधि जाँय

हैं । सो तासों, श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी की नथ की शोभा देखिकें तन, मन, धन सों वश होय जाँय, वा नथ में मोती चुन्नी रूप श्रुतिरूपा गोप भार्य्या मुख्य के भावतें । गोलाकार श्री यमुनाजी सोने की झलमलात रूप हैं, और चुन्नी रूप सोलह हजार कुमारिकान में मुख्य हैं । सो अलौकिक सुखरूप श्री ठाकुरजी धारण कर अधरबिंब के रस को पान करत हैं । अथवा शुकरूप तथा तिलके फूल रूप श्री ठाकुरजी को नथरूप भक्त अधरामृत के रस को पान करिकें, उन्मत्त होयकें झूम रहे हैं । सो परस्पर दोऊ रसपान करत हैं ।

पाछे चिबुक पर श्याम बिन्दु अत्यन्त शोभा देत हैं सो ताको भाव यह हैं, जो श्री ठाकुरजी छोटे भ्रमर को रूप धारण करि चिबुक पर यातें विराजत हैं । जो श्री स्वामिनीजी, आप अपने मन में प्रसन्न होयकें दूध दही इत्यादि जो रस को पान करें, सो बढ़िकें चिबुक पर आवे, सो तासों श्री ठाकुरजी वा प्रसादी अधरामृत रस के पान करणार्थ चिबुक पर विराज रहें हैं, अब दोऊ भुजान के आभूषण को भाव वर्णन करत हैं । सो बाजूबंद जड़ाऊ पहिरे हैं । ताके नीचे गोल कड़ा पहिरे हैं । ताके नीचे श्री ठाकुरजी की रीति विपरीत अनेक रस के बंधन के भाव कों सूचन करत हैं । सो दक्षिण दिशा के बाजू बड़ा विपरीत रस तथा अनेक रस के बंधन को भाव प्रगट करत

हैं । और वाम दिशा के बीच रीति रस को भाव जनावत हैं । ताके नीचे कंकन, पहुँची, पछेली, चूरी, धारण किये हैं, सो चूरी सौभाग्यरूप हैं, और कंकन श्री ठाकुरजी ने ब्याह खेल करिके कुञ्ज में पहिराये हैं, पहुँची रूप श्री पुरुषोत्तम के सर्वांग रस को अनुभव करन कों श्री स्वामिनीजी की ही पहुँच है, अन्य कुमारिका कहें अब हमें भी पहुँचाय देऊ । क्योंकि हम तिहारी शरण हैं । तब श्री स्वामिनी ने पूर्ण पुरुषोत्तम के अधरामृत को रसास्वादन समस्त, गोपिकान कूँ करायो । और पछेली श्री चन्द्रावलीजी को मनोरथ को भावरूप धराये । और चूरी श्रीयमुनाजी की लहरि रूप हैं । या भावतें श्री ठाकुरजी सदा बिहार करत हैं और कंकन कर श्री ठाकुरजी सदा हस्त में राखत हैं ।

श्री हस्त के ऊपर के तल पर हथसाँकला के फूल हैं, दस आँगुरीन में दस मुद्रिका हैं । बीच में हथ साँकली हैं । सो श्री ठाकुरजी के श्रीहस्त कों बांध लिये हैं ।

कंठ में तीन मनिका स्याम रेशम की पाट में पोये भये हैं सो सोने के हैं । सो सात्विक, राजस, तामस भक्त हैं ।

उर स्थल पर स्याम कंचुकी कसिके बाँधी है, सो बंध रूप हैं । दोनों तनी पीठ पर बंधी हैं, सो श्री ठाकुरजी के दोनों श्रीहस्त हैं । सो गाढ आलिंगन के भाव-रूप हैं ।

कंचुकी पर चौकी विराजमान है । सो निकुंज को

शैया रूप हैं । चौकी के नीचे धुगधुगी रत्न जटित है । स्याम पट में पोई भई है । धुगधुगी के मिष तें श्री ठाकुरजी कों हृदय पर रखे हैं ।

सोना की चंपकली तिलरी, दुलरी आदि आभरण श्री स्वामिनीजी के श्री कण्ठ में विराजे हैं, सो श्रीस्वामिनीजी के श्याम कंचुकी रूप श्री ठाकुरजी को पूजन कियो तब चंपकली दीपमाला समान भई । मोती माला सुरसरी गंगा समान भई ।

श्री स्वामिनीजी को लहेंगा सो श्री ठाकुरजी को घेर है स्याम सारी श्री ठाकुरजी के श्री अंग की भावना तें धरी हैं, केसरी सारी पीताम्बर के भावतें कभी धरें हैं । लाल साड़ी श्री ठाकुरजी को स्नेह है । हरी सारी रहस्य लीला को सूचन करिवे को कभी धारण करें ।

चरन में नुपुर, घुंघरू, पायल, अनवट, बिछिया, इत्यादि स्वामिनीजी धरावें हैं । सो घुंघरू श्री ठाकुरजी के श्रीहस्त के टीकड़ के बाजूबन्द को भाव जाननो । पग पान शीतकाल में श्री ठाकुरजी शीश फूल धरावें हैं, ताके भाव रूप । अनवट श्रीहस्त अंगुष्ट के नख के भाव रूप जानने । बिछिया टोपी के भाव रूप हैं ।

श्री स्वामिनीजी के चरण-तल अत्यन्त लाल हैं । सो श्री ठाकुरजी के अधरबिंब के भाव रूप हैं । या प्रकार नख तें शिख पर्यन्त युगल स्वरूप के शृंगार की भावना करिके शृंगार धरावनो ।

३३. श्री वेणु वेत्र की भावना

श्री नवनीतप्रियजी आदि बाल स्वरूप कों वेनु आवे वेत्र नहीं । वेनु वेत्र की तरह पास धरनी ।

३४. दर्पन की भावना

दर्पन श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग को प्रतिबिंब है । सो दर्पण देखिकै श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग में अपनां श्रीअंग देखिकैं प्रसन्न होत हैं ।

३५. चरण स्पर्श की भावना

श्री ठाकुरजी के चरणारविन्द भक्ति को स्वरूप है । यातें चरण स्पर्श ते भक्ति हृदय में आवें । प्रतिदिन भक्ति भाव बढ़ें, और मन में आनन्द बढ़े । जैसे श्रीगिरिराजजी श्री ठाकुरजी के चरन परस तें प्रमुदित होय हैं ऐसे वैष्णव कों होनों ।

३६. गोपीबल्लभ की भावना

गोपी बल्लभ भोग धरते समय शृंगार की फूल की माला बड़ी करनी । माला सब व्रज भक्त को स्वरूप है । सो गोपी वल्लभ भोग श्री स्वामिनीजी के मनोरथ की सामग्री है ताते सब व्रज भक्तन के सम्मुट श्रीस्वामिनीजी के रस के अनुभव में श्री ठाकुरजी स्वय लज्जित होंय हैं ।

भोग धरते समय यह श्लोक बोलनो –

"गोपिका भावतः"

श्लोक को अर्थ -- जा प्रकार तें गोपिका के भावतें गोपीजनों के गृह में आरोगें हैं, वा प्रकार हैं, गोपिजनों के पति ! कृपा करिके मेरो समर्प्यो भोग आरोगो । इत्यादि ।

३७. कटोरी भोग धरने की भावना

शृंगार भोग में भोग के पास दो कटोरी धरनी । एक कटोरी में मिष्ठान सामग्री धरनी और दुसरी में माखन और लड्डू मिश्री के । गुलाब श्रीखण्ड गिंदोडा आदि । श्री स्वामिनी के अधरामृत रूप हैं । मेवा की कटोरी में बादाम, किसमिस, छुहारा, गिरी मिश्री के टूक, पिस्ता आदि आवे । मिश्री श्री स्वामिनीजी को अधरामृत, बादाम, दाख, किसमिस श्री यमुनाजी की सुधा, छुहारा, कुमारिका के भाव रूप गिरी सो श्री चन्द्रावलीजी के रहस्य भावरूप पिस्ता विशाखाजी के भावरूप जानने ।

३८. शृंगार भोग धरने की भावना

श्री स्वामिनीजी रस को अनुभव करिकै शृंगार भोग धरे हैं । शृंगार भोग पीछे श्री वल्लभकुल में गोपी वल्लभ आवें । वैष्णव के यहाँ न आवें । शृंगार भोग में अनरसखड़ी, पूरी, मेदा की, दो दो तरह की एक खरखरी एक नरमपूरी, थपड़ी बेसन की नरमपूरी श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ की है । खरखरी कुमारिका के मनोरथ की थपडी

श्री यमुनाजी के मनोरथ की है ।

एक दही की कटोरी, एक संधाना की कटोरी, एक खाँड की कटोरी तथा ओट्यो दूध केशर बरास मिल्यो भयो सुगन्धित तथा खीर । ए श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ रूप हैं । दही श्री चन्द्रावलीजी के मनोरथ रूप । यूरो श्रीयमुनाजी के मनोरथ रूप । संधानो कुमारिका के मनोरथ रूप जाननों । शीतकाल में अनसखडी में दो साग धरने । गोपीवल्लभ में सखडी बनि आवे तो धरनी । कदाचि नित्य न बने तो रविवार तथा द्वादशी को अवश्य धरनी । भात को थार, एक दाल को डबरा, एक पापड एक अथवा दो सखडी के साग एक कटोरी में घी, तथा घी की सामग्री इतने अवश्य धरनो । घी है सो श्री स्वामिनीजी को स्नेह है । भात है सो श्री चन्द्रावलीजी के हास्य रूप हैं । दार श्रीयमुनाजी को प्रेम है । पापड श्रीकुमारिका के भाव रूप हैं । साग सब व्रजभक्तन के भाव रूप हैं । सोना की कटोरी श्री स्वामिनीजी को भाव । चाँदी की श्रीचन्द्रावलीजी के भावरूप हैं । काँसा सब सखीजनन के भावतें और रांग सब दूती जनन के भाव रूप । पत्ता पुष्टिमार्गीय भगवदीय वनस्पति हैं ।

या प्रकार भावना कर भोग धरनो पाछें झारी भरनी । समयानुसार भोग सराय के आचमन मुख वस्त्र करने पाछें बीरी आरोगावनी । बीरी श्री ठाकुरजी की दक्षिण ओर ठाडे

होयके श्रीयन्त्रावलीजी के भाव तें आरोगावनी । पाछें भोग धरिये की चौकी कों धोयके मंदिर वस्त्र करनो । मंदिर वस्त्र करिवे की सेवा कुमारिकान की है सो उनको स्मरण करिके करनो ।

३९. गोदोहन और गोपाल भोग की भावना

गोपी वल्लभ आरोगिकें श्रीठाकुरजी द्वार पर खेलिवे पधारें हैं । तब श्रीयशोदाजी श्रीदामा कों श्रीठाकुरजी की निघाह रखिवे को कहें हैं । फिर सब भक्तन कों दर्शन देंइहैं, काहू कों बीरी दें हैं, काहूकों माला काहू कों वाणी तें समाधान करत हैं । इतने ब्रजभक्तन के भावते ग्वाल (अन्तरंग सखा) आवें हैं, सो श्रीठाकुरजी कों प्रार्थना करिकै गाय दोहिवे ले जाँय हैं । खिरक में वहाँ श्रीठाकुरजी के पास घर घर ते श्रीस्वामिनीएँ अपनी अपनी दोहनी लेकें आय रही है । और प्रभुन तें प्रार्थना करत हैं, जो पहले हमकों गाय दोहिदो घर में हमारे काम बहुत हैं । सो श्रीस्वामिनीन की विनती तें अनेक रूप धारण करिके नेत्र कटाक्ष तें संकेत में समाधान करते भये सबकी गाय दुहि देंय हैं । पाछें श्रीगोपीजन विनती करिके श्रीठाकुरजी कों कहत हैं, ग्वाल भोग लीजिए । या प्रकार भावना करिके डभरा में जो तातो दूध होय वामें बूरो मिलायके रूपा के कटोरा में सीरो करिके अरोगने लायक होय तब सिंघासन

पास दूध ल्याय के सोना रूपा के पात्र में भरिकै दूध आरोगावनो । या प्रकार गोपीवल्लभ भोग की भावना करनी । गोपीवल्लभ भोग वैष्णव के यहाँ न आवे । पाछें आचमन मुख वस्त्र करनो । सो आचमन तें प्रभु को गाय दोहिवे ते भयो श्रम दूर होय है । मुख वस्त्र श्री स्वामिनी के अंचल के भावतें है । ग्वाल भोग में बीडा आरोगें । सो श्री यशोदाजी के भावतें । पीछे श्रीयशोदाजी कुमारिकान कों कहें हैं । जो जब तक राजभोग की सामिग्री सिद्ध न होंय तब तक श्री ठाकुरजी कों माखन आरोगावो । सो दूध कों मथिके माखन आरोगावें हैं । सो श्री स्वामिनीजी के अधरामृत रूप हैं । पाछें पलना झूलें सो –

४०. पलना तथा पलना के भोग की भावना

श्री यशोदाजी पुत्र भाव में पलना झुलावें हैं, और श्री यशोदाजी के यहाँ कुमारिकाएँ पति भाव तें श्री ठाकुरजी कों हिंडोरा खाट पर झुलावें हैं । सो विहार के भावतें और श्रीगुसाँईजी ने 'प्रेखपर्यंक' कीर्तन गायो है सो तो 'माननी मान हरणं' के भाव रूप हैं ।

पलना में तीन सुफेदी एक चादर पीछे हैं । सो नीचे की सुफेदी श्रीयमुनाजी के भाव तें; बीच की श्री चन्द्रावलीजी के भावतें और उपर की श्रीकुमारिकान के भावतें । तापर चादर बिछे सो श्रीस्वामिनीजी के हृदय कौ

भाव है, या प्रकार शैया में भी तीन सुफेदी एक चादर दिये। पाछे पलना के भोग की सामग्री वस्त्र तें ढांपिके गादी आगे धरनी। सो वा सामग्री में एक कटोरा में बेसन की थपड़ी कोई कोई बेर थपडी पर सेंधो लोन हु लगे। एक में बेसन की सेव एक में माखन एक में बूरो, एक में मेवा इतनो अवश्य धरनो।

बेसन की थपड़ी श्रीस्वामिनीजी के कपोल स्वरूप है। सेव अधररूप, माखन अधरामृत स्वरूप, मेवा चारों पूर्णाधिपति रूप।

जब ताँई राजभोग की सामग्री सिद्ध होय तब ताँई पलना झूलें।

४१. खिलौना को भाव

खिलौना में कोयल श्रीस्वामिनीजी को गान है। फिरकी श्रीचन्द्रावलीजी को नृत्य है। पपैया कुमारिका को भाव है। चटकना एक फिरकनी रूप एक चकई रूप दोनों भँवरा हैं। सो श्री ठाकुरजी को कटाक्ष रूप रस्सी तें पकडि कै खेंच अपने पास लेंइ हैं। बड़ी गेंद सोना चाँदी की श्रीचन्द्रावलीजी के कुच मण्डली श्रीस्वामिनीजी के भावरूप। हयबंगी लाल सात्विकी भक्त को दीनता तें नृत्य करिके कहत हैं, जो हम तैयार हैं। झुनझुना दुहेरा भक्त के हाथ के आभूषण रूप हैं। इकहरा झुनझुना व्रजभक्तन के हाथ की घुटकी रूप आभरण होयके बजें हैं। खिलौना की दो

तवकडी । एक में हाथी, घोड़ा, बाघ, सिंह, हिरन आदि खिलौना धरें । सो पुष्टि भक्तन के संग लीला करें तब अनाधिकारीन के विरोधकर्ता । अनुकूल भक्तन के लिये सब रसात्मक अंग रूप हैं । दूसरी में सुक, मैना, कबूतर, कोयल, बतक आदि श्रीस्वामिनीजी के निकुंज संबंधी पक्षी हैं । वे मधुर बचन बोले हैं । ये संकेत करिवे वारे पक्षी हैं । सो उद्दीपन भाव रूप हैं । एक और तवकडी में जल केजीव मीन, मगर, कछुआ, बकई, चकवा, बगुला, सारस, हंस आदि इनको देखिकें जल विहार को रस उत्पन्न होय है ।

या प्रकार की रीति तें खिलौना धरने । भाँत भाँत की जल-स्थल सम्बन्धी लीला हैं । पाछें राजभोग सिद्ध भये, श्रीठाकुरजी को सिंहासन पर पधरावने ।

४२. राजभोग के समय में सिंहासन तथा सांगामाची की भावना

भोग मन्दिर में सांगामाची ऊपर श्री ठाकुरजी को पधरावने । वामें रीति और विपरीत दो प्रकार की भाव विचारनो –

१. रीति

सिंहासन आगे श्री ठाकुरजी को भोग आरोगावे तब भक्त वहाँ आयके श्री ठाकुरजी के भगवद् रस को अनुभव

करें हैं यह रीति प्रकार की वर्णन है ।

२. विपरीत

भोग मन्दिर में श्री ठाकुरजी राजभोग आरोगें हैं तब भक्ताधीन लीला हैं, यासूं श्री ठाकुरजी आप भक्तन के रसन कौं अनुभव करें हैं । यह विपरीत प्रकार है ।

राजभोग समय प्रथम धूप दीप करने'।

राजभोग की सामग्री

शीतकाल में धरिवे कों सखड़ी की सामग्री –

उर्द, मूँग, मोंठ, चना, पापड़ी आदि प्रतिदिन फिरते करने । बाजरी, मेथी, गेहूँ की रोटी, बाटी आदि फिरती करनी । बेझर की रोटी में हल्दी,जीरा, नोंन डारके करनी याही प्रकार चूरमा आदि और ऋतु अनुसार साग । भुजेनां, भात मूंग, कढी, खीचरी आदि । अनसखड़ी में ठोर, पूरी, मगद, बूंदी, लाडू लुचई आदि रबड़ी, दूध, दही, रायता, संधाना, माखन, सिखरन इत्यादि, साथ में जल की कटोरी, मूंग, भात और घी को एक कौर करनो सो भोग सरे तब गौ ग्रास में जाय ।

उष्णकाल और वर्षा में भी ऋतु अनुसार सखडी की सामग्री आरोगे । दार में मूंग, चना और अरहर के सिवाय अन्य न आरोंगे । उष्णकाल और वर्षा में तेल न आवे । उष्णकाल में घी को और जल को सतुवा आरोंगे ।

४३. धूप दीप की भावना

धूप सुवास के लिये है । श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग की सुगंधी की भावना तें होय । जहाँ ठाकुरजी सामग्री आरोगें वहाँ किसी की दृष्टि पड़ी होय तो दीप दृष्टि दोष निवृत्यार्थ है ।

४४. तुलसी समर्पण की भावना

सामिग्री मेंते अन्य सम्बन्ध निवृत्यर्थ तुलसी समर्पण करनो । दूसरो भाव श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग की गंध रूप तुलसी है । 'प्रियांग गंध सुरभि तुलसी चरण प्रिया' । यासूं सामिग्री में श्रीस्वामिनीजी के भाव को सम्बन्ध होय है । तुलसी समर्पण की बिरियाँ 'पंचाक्षरमंत्र' बोलनो ।

४५. शंखोदक की भावना

शंख को जल आधिदैविक रूप है । वह जल श्रीठाकुरजी के सन्मुख अरोगिवे की सामग्री पर छिरकनो यासूं सब अमृतमय रस रूप होय । शंख श्रीस्वामिनीजी के कंठ रूप हैं । यासूं शंख को जल श्रीस्वामिनी के अधरामृत रूप है । तातें श्री ठाकुरजी वह जल के स्पर्श की सामग्री प्रीति पूर्वक आरोगे । "श्रीराधा अधर सुधा बिना बीजूं ते कई नव भावेजी" यह भाव विचारनो ।

अथवा धूप श्रीस्वामिनीजी । दीप श्री चन्द्रावलीजी के हृदय को विरहताप न्यौछावर । तुलसी सोलह हजार

कुमारिका हैं, सो श्री ठाकुरजी में उनको पतिभाव है । यासूं प्रबोधिनी के दिन तुलसी विवाह होय है । शंखोदक श्रीयमुना के भावरूप या प्रकार चारों यूथाधिपति को भाव जानो ।

४६. राजभोग धरिबे की भावना

राजभोग में श्रीनंदरायजी के घर की आठ उपनंद के घर की, और श्रुतिरूप के मनोरथ की सामग्री हैं । सो श्रीनन्दरायजी के घर में रही कुमारिका ये सेवा करें हैं । श्री यशोदाजी के मनोरथ की सामग्री अलग करिके कुमारिका आरोगावें हैं । गुप्त रस के भावतें व्रज भक्तन के यहाँ गुप्तरीति चोरी ते आरोगें हैं । निकुंज में श्री स्वामिनीजी आरोगावें हैं । उष्णकाल में छाक बन में आरोगें । वहाँ व्रजभक्तन के मनोर्थ पूरे होय हैं ।

राजभोग धरिके बाहर आय रसोई के पात्र मांजने । शृंगार करते समय भगवन्नाम और सर्वोत्तम आदि स्तोत्र को पाठ न भयो होय तो अब करनो । दो घड़ी पीछे भोग सरावने । लौकिक कार्यार्थ ढील न करनी ।

आचमन कराय मुख वस्त्र करि थोड़ी आरोगावनी । चौकी उठायके धोवनी । मन्दिर बस्त्र करनो । चरणारविन्द की तुलसी बढ़ी करनी । माला धरावनी दिवाली तक सौप्यामन्दिर में पधी राखनी पीछे नहीं । विजय दशहरा

तक सिंहासन उपर शैया-भोग, बीड़ा और माला आदि धरनो ।

४७. सिंहासन और तकिया की भावना

पहले कहि आये हैं । पाछे ठाड़े स्वरूप को वेणुवेत्र धरने । खण्डपाट सिढी सिंहासन को लगाय के धरनी ।

४८. खण्ड पाट की भावना

खण्ड के सीढी हैं, सो श्रीस्वामिनीजी को भाव है । प्रथम सीढी गोपभार्या श्रीचन्द्रावलीजी के भावतें, लाज को निवृत् करिकै पीछे ठाडे हैं । यह भाव है, बीच की सीढी कुमारिका के भाव रूप है । श्रीठाकुरजी के पास की सीढी कुमारिका के भाव रूप हैं तथा श्री ठाकुरजी के पास की सीढी श्रीयमुनाजी के भावरूप हैं । यह जाननो ।

तीनो खण्ड

सीढी पर रुई की गादी बिछामनी वे रुई की गादी तीनों भक्तन के गुन रूप हैं । खण्ड पर खिलौना और चार तबकड़ीं धरनीं । दो जेंमनी और दो बाँयें ।

वाम भाग श्रीस्वामिनीजी और जेंमनी और श्री चन्द्रावलीजी की स्थिति हैं । ऐसो भाव विचारनो ।

खण्ड के आगे पाट धरनो । वाके ऊपर वस्त्र आवें खोली वह श्रीललिताजी के हृदय रूप हैं । आस पास दो

गादी आवे । वे दोनों श्रीस्वामिनीजी और श्रीयमुनाजी के भावरूप हैं । जा गादी पर प्रिया प्रीतम विराजें हैं । सो भक्तन के हृदय के भावरूप हैं ।

४९. चौपड़ की भावना

पाट के बीच में चौपड़ आवे । वामें हाथी दांत की श्रीयमुनाजी के भावरूप, काष्ट की अग्निकुमारिका के भावरूप, शतरंज बाघ, बकरी चारों यूथाधिपति के भावतें । चौपड़ में गोटी सोलह वामें एक-एक घर में चार-चार रहे, सो चारों घर अलग-अलग निकुंज में भावरूप हैं ।

एक-एक घर में चौबीस कोठा के बारह अंग भक्त के बारह श्रीठाकुरजी के जानने । चौबीस मन्दिर निकुंज रूपी सुन्दर घर हैं । या प्रकार ९६ कोठा हैं । वहाँ काम शास्त्रोक्त बारह मास की नित्य लीला हैं ।

कोई बार अधिक के कारण तेरह महिना भी होय हैं सो बीच को बड़ो घर नन्दालय रूप जाननो ।

चार भक्तन के निकुंज आदि भावतें चौरासी कोठा हैं । सो व्रज की बारह बरस तांई की लाली को विचार करनो । ग्यारह बरस पीछे प्रभु मथुराजी पधारें, सो बारह बरस के भीतर के स्वरूप की भावना करें, सो बालभाव, कुमार, पोगण्ड, और किशोर ऐसे सब भाव आय जाँय ।

पासें ३ हैं । रासजी, तामसी, सात्विक भाव रूप ।

जब श्रीठाकुरजी पासा तें खेले तब रीति को रमण, भक्त जब पासा डारें, तब विपरीत रमण जब भक्त कोई घेर तामस होय जाय तब भगवान सात्विक भाव धारण करें हैं। राजस में दोनों राजस होंय हैं।

जा ऋतु को भोग करिवे की भक्त इच्छा करें वही इच्छा श्री ठाकुरजी करें हैं। तीन-तीन गुन संयुक्त होयकें नव होंय। सो पांसे तीन हैं। एक पांसे में १४-१४ अंक हैं। सो चौदह सम्पूर्ण विद्या हैं।

श्री ठाकुरजी की सोलह कला, और भक्त दश प्रकार के या भावतें चौपड़ खेलें हैं। प्रभु हारें तब भक्त विपरीत रमण करें हैं। भक्त हारें तब प्रभु रीति रमण करें हैं। या प्रकार चौपड़ को भाव गोपनीय है। उत्सव में अभ्यंग होय वा दिन चौपड़ अवश्य बिछे।

५०. बाघ बकरी की भावना

आठमें दिन शतरंज और बाघ-बकरी करिके धरने। चौपड़ श्रीस्वामिनीजी के भावरूप हैं, बाघ-बकरी सोलह हजार कुमारिका के भाव-रूप।

बाघ बकरी को भाव या प्रकार

बकरी सोलह, बाघ दो अथवा एक। जब श्रीठाकुरजी कों भक्त अपने वश करें हैं। तब श्रीठाकुरजी बकरी के समान भक्त की आज्ञानुसार चलें हैं। तब भक्त विपरीत

रमण करें । कोई वार श्रीठाकुरजी बाघ के समान रीति विपरीत ऐसो दोनों प्रकार तें रमण करें हैं । सोलह बकरी बार यूथाधिपति के राजस, तामस, सात्विक और निर्गुण भावना हैं ।

दो बाघ

श्रीस्वामिनीजी और चन्द्रावलीजी ठाकुरजी बकरी रूप हैं । दो बाघरूप स्वामिनी बकरी रूप ठाकुरजी कों घेर लेय हैं । दोनों आडीतें ।

एक बाघ को भाव है केवल स्वामिनी रूप । दंपति रूप में बकरी श्रीस्वामिनीजी और बाघ मानादिक में प्रभु को स्वरूप ऐसे विचारनो ।

कोई वार चार बकरी होंय तो चार यूथाधिपति को भाव विचारनो । उनमें एक-एक सखी तरंगिणी हैं । यातें उनमें पाँच-पाँच बकरी इकट्ठी आवें हैं । घर चौंसठ सो चौंसठ कला । एक-एक स्वामिनी सोलह कला पूर्ण हैं । यातें उनमें पाँच-पाँच बकरी इकट्ठी आवें हैं । घर चौंसठ सो चौंसठ कला । एक-एक स्वामिनी सोलह सोलह कला से पूरन । 'चौंसठ कला प्रवीन तदपि भोरी' या भावतें बाघ बकरी को भाव विचारनो ।

५१. शतरंज की आवली

श्रुतिरूपा श्रीचन्द्रावलीजी के भावतें राजसी भक्तन को

मनोरथ यातें शतरंज हैं । यामें चार हाथी घोड़ा ४ ऊँट ४ वजीर दो बादशाह दो प्यादे १६ होय हैं या प्रकार सब मिलके २२ । सो सोलह भक्त के सोलह श्रीठाकुरजी के जानने । सो १६-१६ श्रृंगार रूप हैं ।

श्रृंगार राजसी – भक्तन कों बहुत प्रिय है । यह खेल राजान को है । यातें गोठ ३२ हैं । यामें चार हाथी करिकै गजबत् लीला पंचाध्यायी में कहे हैं ।

श्लोक – 'गंधर्व पा . तें लेकर 'रे मे स्वयं स्वरतिरत्न गजेन्द्र लीला ।' या प्रकार को विहार है यामें चार हाथी हैं । सो ये चार प्रकार के भक्त श्रुतिरूपा हैं । सो श्री ठाकुरजी के निजधाम में हती, सो वरदान ते व्रज में गोपीजन भई हैं ।

सो सात्विकी राजस, तामस, निर्गुण-या प्रकार चार और चार यूथाधिपति स्वामिनी के भावरूप चार घोड । सो पवन के वेग के सदृश श्रीठाकुरजी कों लेके गुरुजन गोप कोई होइ नहीं वहां निकुंज में लेइ जाँय हैं ।

ऊँट

अपनो पकड़ में प्रसिद्ध है । पकड़े ताकूं छोड़े नहीं । या प्रकार श्रीठाकुरजी को पकड रखें हैं चार यूथपति ने । अथवा ऊँट बोझ उठायवे में प्रसिद्ध है । सो यहाँ श्रुतिरूपा, गोपस्त्री । सो गृहस्थाश्रम में प्रतिबन्ध होयवे में भी तन,

मन, धन सब श्री ठाकुरजी को समर्पण कियो है और उनकी चाल ऐसी होय हैं । सो श्रुतिरूपा वेणुनाद समय तेजगति तें श्री ठाकुरजी के पास गई हैं ।

वजीर दो – बादशाह सो ठाकुरजी और स्वामिनीजी दोनों युगल स्वरूप दो बादशाह हैं । और श्री चन्द्रावलीजी और अनिरुद्धारिका दो वजीर है । क्यों जो ये दोनों दास भावना है ।

प्यादे १६ – आठ श्रीठाकुरजी के सखा और आठ श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं । सो दोनों मिलके १६ भई ।

शतरंज – शत जो अनेकानेक श्रीस्वामिनीं उनके मन की रंजन (प्रसन्न) करे हैं ।

५२. खिलौना तबकडी की भावना

सिंहासन के पास तो तबकडी खिलौना की धरनी । वामभाग में हाथी दांत की और जॅमनी और काष्टके लाल खिलौना । हाथी दांत के श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ के हैं । काष्ट के श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ के । खिलौना भाव उद्दीपनार्थ हैं ।

५३. पीकदानी की भावना

पाट के आगे बीचों-बीच एक खाली तष्टी धरनी । यह श्रीललिताजी के भावरूप हैं ।

५४. गेंद की भावना

पाट के ऊपर दो गेंद आवें । सो कभी जडाव की कभी सोना की कभी रूपे की, कभी सूत की ऊपर रेशमी कलावन्द होय कभी हाथी दाँत की कभी काष्ट की । वह यूथाधिपतियों के भाव रूप हैं । गेंद के पास चौगान धरनी । सो यूथाधिपतिन के भुजा रूप हैं ।

५५. दर्पण की भावना

दर्पण श्रीठाकुरजी को दिखावनों । सो श्रीस्वामिनीजी के नखचन्द्र की भावना हैं । अथवा श्रीस्वामिनीजी के प्रतिबिंब रूप जाननो । वामें अपनो स्वरूप देखिके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न होंय हैं ।

५६. आरती की भावना

सो सब व्रज भक्तन के हृदय के तापकों न्यौछावर करत हैं । फिर दर्पण देखें । सो श्रीस्वामिनीजी अपने हृदयरूप दर्पण में श्री ठाकुरजी कों लैकें निकुंज में पधारें हैं । अथवा निकुंज की सूचना करें हैं ।

५७. माला बड़ी करनी ताकी भावना

फिर फूल की माला बड़ी करनी सो फूल की माला व्रज की सब स्वामिनी हैं । सो उनको ठाकुरजी आज्ञा करत हैं जो सब अपनी अपनी निकुंज में पधारो । आगेतें सामग्री

सिद्ध करो । पीछे हम आवेंगे ।

५८. पेंडे की भावना

भोग तें सिंहासन ताँई श्री ठाकुरजी के पधारवे के लिये गादी बिछावनी सो पांवडे बिछायवे को भाव है । अथवा श्री ठाकुरजी वन में पधारत हैं, सो भाव जाननो ।

५९. ताला मंगल की भावना

मन्दिर को ताला मंगल करने सो ताला है, सो श्रीस्वामिनीजी के हाथ की मुट्ठी है । सो मुट्ठी के भीतर श्रीठाकुरजी रूपी रत्न हैं । सो श्रीस्वामिनी रूप श्रीआचार्यजी के वश ठाकुरजी हैं । सो उनके दृढ़ आश्रय तें भगवद्दर्शन होय । सो ताला को भाव है । सो ताला मंगल करि दण्डवत करि बाहर आवनो ।

६०. वैष्णवन को प्रसाद लिवायवे की भावना

वैष्णवन के हृदय में श्रीमहाप्रभु श्रीठाकुरजी सब विराजें हैं । या भावतें वैष्णवन को स्नेह पूर्वक प्रसाद लिवावनो । वैष्णव को प्रसाद लिवावे तब वह महाप्रसाद होय । सो लेवे तें दास भाव बढ़ें । प्रसाद लेवे के समय अचानक वैष्णव आवें तो अहोभाग्य मानें और जो कोई वैष्णव न आवे तो गौ ग्रास काढनो । गाय है सो व्रज भक्त को रूप है । गौ ग्रास नित्य काढनो, और शक्ति अनुसार

वैष्णवन को आग्रह पूर्वक हू लिवावनो । सामग्री सुधरी-बिगड़ी जानवे के लिये प्रसाद में स्वाद को अनुभव करनो । दैहिक सुख की भावना ते नहीं करनो ।

६१. वीरी की भावना

कुल्ला करे । पीछे मुख शुद्धयर्थ भगवत्प्रसादी वीरी लेनी पाछे दो घड़ी आलस निवृत्ति अर्थ सोय जानो । व्यौपार धंधा नौकरी अर्थ जानो होय तो जावे । पाछें पुष्टिमार्ग के पुस्तकन को अवलोकन करनो ।

६२. उत्थापन की भावना

एक प्रहर दिन रहे तब श्री ठाकुरजी को उत्थापन करावनो । अबेरी करनी नहीं । चिन्ता पूर्वक यथा समय स्नानादि करि चरणामृत तिलक ले मन्दिर में जाय उत्थापन की सामग्री, मेवा आदि ऋतु अनुसार सिद्ध करने । गरमी में कॉकड़ी खरबूजा पना आदि धरनो । ऊख को रस कार्तिक सुदी ११ तें फागुन वदी पड्वा तक धरनो पाछें श्री ठाकुरजी को जगावनों पेंडे उठावनो । पाछें दरशन करावनो । शैया और सिंहासन के पास धरी झारी, माला, बीड़ा सब उठाय के प्रसादी पात्र में ठलावने । उत्थापन की झारी शीघ्र धरनी देर नहीं करनी । पाछें कन्द मूल फल फूल श्री पुलिंदिनीजी की भावना ते धरिके टेरा दे बाहर आवनो ।

६३. भोग समय की भावना

शीतकाल होय तो किवाड़ खोलि चौपड़ के आगे अंगीठी धरनी । उष्णकाल होय तो छिरकाव करनो ।

६४. संध्या भोग की भावना

वैष्णव के यहाँ नहीं । संध्या में मठड़ी संधाना, आदि धरनो । पाछें समय भये आचमन मुख वस्त्र करने । यह बनतें व्रज में आवत समय को मार्ग को भावरूप भोग है । सब व्रजभक्तन के भावरूप । पाछें नन्दालय में श्री यशोदाजी आरती करें हैं ।

६५. श्रृंगार बड़ो करिवे की भावना

माला, चन्द्रिका, बाजूबन्द, आदि बड़े करने । करनफूल, बेसर, चिबुक, तिलक, श्रीकंठकी कंठसरी, कटिकिंकिनी, पहुँची, नूपुर इतनो श्रृंगार स्वामिनीजी के भावरूप हैं । झारी भरें, डबरा भोग धरें । वैष्णवन के यहाँ नहीं ।

६६. शयन भोग की भावना

पाछें शयन भोग आवे । तामें सखड़ी अवश्य धरनी । यदि न बनें तो दशम्, द्वादश, अमावस के दिन तो अवश्य धरें । आधो समय होय पाछे ओट्यो दूध भोग धरे सो केसर, बरास, सुगंधी ते मिश्रित होय तामें सोना, अथवा रूपा की अथवा कांसा की कटोरी फिरती रखें । दूध

श्रीस्वामिनीजी के अधरामृत रूप हैं ।

६७. शयन आरती की भावना

ता पाछै शयन भोग आवें सो शयन में सखड़ी अवश्य चाहिये । न बने तो द्वादशी के दिन अवश्य करिकें दारि मूंग की भात, मिरच को शाक, राजभोग तोंई सामग्री है, सो कटोरी होय तामें तें थोरो थोरो धरि राखिये भोग धरिये संधाने की कटोरी धरिये । लोन की कटोरी धरिये । जल की एक कटोरी भरिकें धरिये । एक कटोरी दुध की धरिये । एक कटोरी न्यारी दूध भात की धरिये । ता पाछें दण्डवत करिकें बाहिर आइये । सो जब आधोसमय होय चुकै तब दूसरो भोग माठै औट्यो दूध तामें चमचा सोने तथा रूपे तथा पीतर वा काँसी को डारिये सो एक कटोरा में दूध भात एक कटोरा में दूध । केवल सखड़ी न बने तो दूध शयन में अवश्य धरिये । सो काहें ते दूध शयन में होय तो सगरे दिन की सामग्री दूध की नाई प्रभुन को सुखदायक होय तातें दूध शयन में श्रीस्वामिनीजी को अधरामृत है सो अत्यन्त मीठो और गाढ़ौ है, सो यह भावना करिके भोग धरिये । पाछे दण्डवत प्रार्थना करि बाहिर आइये । सो जब आधो समय होय चुक्यो होय तब झारी ले आचमन मुखवस्त्र करि बीड़ी आरोगाइये । बीड़ा दाहिनी ओर धरिये और शयन के दर्शन सेवा सम्बन्ध वारे

करें । तथा और कोहू कराइये ता पाछे वागा वड़ो करि पाग टोपी सबाँ रहें, फेरि ऊपर पोढ़ाइये । सो शयन आरती वैष्णव के आवश्यकीय नाहीं हैं, सो शैय्याजी के पाग दोय झारी धरिये । जो दोय न बने तो एक तो अवश्य धरिये । एक कटोरी माखन की एक मिश्री की धरिये । सो आछी भाँति सों ढाँकिके । ता पाछे रीति अनुसार प्रभुन को पोढाय उठाइये । ता पाछे सिंहासन वस्त्र उलटिके ढाँकि धरिये । श्री स्वामिनीजी होंय तो श्रीठाकुरजी के वामभाग पोढ़ाइये । प्रसिद्धि न होय तो भावना करिये । तामें दोय प्रकार को भाव है । जो श्रीठाकुरजी श्री यशोदाजी के घर पौढ़त हैं, सो तहाँ रात्रि में श्रीठाकुरजी की बैठक न्यारी है सो कुमारिका श्रीराधाजी की सेवा में तत्पर हैं । और कबहूँ सखीजन श्रीठाकुरजी ललिता विशाखा के संग वन में पधारत हैं, और उततें (वरसानें ते) सखीन संग श्रीस्वामिनीजी आवत हैं । सो श्रीठाकुरजी के दोऊ स्वरूप -- परस्पर मिलि के निकुंज मन्दिर में लीला करत हैं, सो तहाँ श्रीठाकुरजी को स्वरूप कोटि कोटि कन्दर्पसों अधिक शोभा देत हैं । सो तिनमें श्रीस्वामिनी अपनो स्वरूप देखिके मन में यह जानत हैं, जो श्री ठाकुरजी के मन में दूसरी नायका विराजमान हैं । सो यह मानिके मन में क्रोध करिके मान करत हैं, और कबहू श्रीचन्द्रावलीजी को देखिके हृदय में मान करत हैं, कबहू

श्रीयमुनाजी को देखिकें श्रीस्वामिनीजी अपने हृदय में मान करत हैं । कबहू कुमारिका कों देखिकें मान करत हैं । और कबहू श्रीचन्द्रावलीजी ब्रज की स्वामिनीजी को देखिकें मान करत हैं, सो तब प्रभु अपने मन में सबकों जानिकें श्रीस्वामिनीजी को मान मनावत हैं । और कबहू श्रीचन्द्रावलीजी को मान मनावत हैं और कबहू श्रीचन्द्रावली और श्री यमुनाजी और कुमारिका और ब्रज की स्वामिनी श्रीस्वामिनीजी सों दीनता करत हैं । जो अपनो दासत्व हमको देहु । क्यों जो हम तिहारे समान नाहीं हैं । तासों तिहारी दासी हैं तासों तिहारे आगे हम श्रीठाकुरजी सों कैसे मिलें । परन्तु आश्रय तिहारो है । सो या प्रकार दीनता के वचन सुनिकें श्रीस्वामिनीजी जो अति चतुर चौंसठ कलायुक्त हैं । तदापि भोरी ऐसी हैं तासों सगरे ब्रज की स्वामिनीन की दैन्यता देखिकें श्री स्वामिनीजी प्रसन्न होयकें बोलत भई जो तिहारो नाम ब्रजरत्ना है । सो काहे तें जो ब्रज में रत्न तुम ही हो याहीतें श्री ठाकुरजी में अपनो पतिभाव कियो या समान और उत्तम भाव नाहीं है । तातें तुम उत्तम तें उत्तम हो तासों हमसों तुममें उत्तम भाव बहुत अधिक है, एक तो सदा पवित्र रहत हो कोई गोप को सम्बन्ध तुमतें नाहीं है, और दूसरे निरुपाधि हो । हमारे विहार के अर्थ सहायक हो और तीसरे उपाध्यायी रस तिहारे नाहीं है । प्रभुन के हृदय में बहुत पियारी हो

तिहारो जुगल स्वरूप में एक रस निरन्तर प्रेम है । चौथे युगल दास होय सो जुगल स्वरूप में दास भाव करै सो तातें हम तिहारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं और पाँचवें तनमन न्योछावर है सो तन-मन-धन सब एक प्रभुन के अर्थ है सो तुम सबरी एक मनी हो और आपस में क्लेश लौकिक बुद्धि है, तातें सों सबरी मिलिकें रहत हो क्यों जो अकेली एक भोरी खरी करत नाहीं । इत्यादिक तुममें अपार गुण हैं सो हम तुमसों एक स्वामिनी भावसों प्रसिद्ध होय रही हो । तासों तुम ब्रजरत्ना सुखेन रहो और श्री ठाकुरजी सो बिहार करो हमारी कोई सो ईर्षा नाहीं है । या प्रकार श्री स्वामिनीजी के वचन सब सुनिकें निष्कपट सबरी ब्रज की श्री स्वामिनीजी प्रसन्न भई, तथा श्री ठाकुरजी के स्वरूप को सुन्दर श्यामघन रूप है । सो तहाँ श्रीठाकुरजी श्री स्वामिनी के भावतें गौर स्वरूप हैं । सो जैसो तप्तवरण सो तैसो झलमलात हैं तो तहाँ अंग में अधिक दैविक हीरा मणीन के आभूषण धरे हैं । मोतीन की माला पहरत हैं, सो जैसे आभूषण हैं, तैसे ही निकुंज भवन मंदिर हू प्रगट भये हैं सो या भाँति सों कहूँ -- सोने के कहूँ रूपे के कहूँ हीरा के कहूँ मोती माणिक पन्ना मुंगा इत्यादिक के अपार कुंज प्रगट भये तासों श्री स्वामिनीजी के सुख के अर्थ सगरे स्थल प्रगट किये हैं । सो निकुंज चेतनीय चलायमान है, सो जहाँ जहाँ युगल स्वरूप पधारे हैं, तहाँ इच्छानुसार यह निकुंज हू

संग चलें और श्री स्वामिनीजी चौकी पहिरें हैं सोई निकुंज मन्दिर की एक फिरकी जाली प्रगट होत भई सो श्री ठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी मोतीन की माला तथा मणिकान्ति की माला पहिरें हैं। सोई निकुंज मन्दिर के द्वार ऊपर ठौर-ठौर बंदनवार शोभित हैं, सो अनेक स्वामिनीजी के अंचल की किनारी झालरी युक्त ब्यार तें झलमलात, फहरात हैं। सोई सब निकुंज में ध्वजा पताका ठौर ठौर शोभायमान हैं सो श्री स्वामिनीजी की नासिका तें ब्यार करत हैं सो ताहीतें निकुंज मन्दिर में शीतल ब्यार मंद सुगंध चलत हैं, सो फूलन के आभूषण जुगल स्वरूप पहिरे हैं। तिनते नाना प्रकार के फूलन के निकुंज प्रगट भये हैं। ताही सों शुक आदि पक्षी नासिका तें प्रगट भये हैं।

निकुंज की भावना

सो हंसादिक पक्षी श्री स्वामिनीजी के चरणन तें प्रगट भये हैं। और सिंह आदि श्री स्वामिनीजी के अंग तें प्रगट भये हैं और भ्रमर मानो खंजन मृग आदि श्री स्वामिनीजी के नेत्रन तें प्रगट भये हैं। सो सब श्री स्वामिनीजी को प्रगट जानि स्वरूप सों कहे बिना सगरी श्री स्वामिनीजी निकुंज में जात भईं। सो निकुंज मन्दिर के भाँति-भाँति के दर्शन पाये परन्तु निकुंज को द्वार काहू को मिल्यो नाँहिं। सो सगरी श्री स्वामिनीजी के द्वार कूँ ढूंढिकें निरास होयके फिर आईं

सो युगल स्वरूप रत्नजटित कुंज में विराजे जहाँ हैं । तहाँ आगकें श्री स्वामिनीजी के चरण कमल कों नमस्कार करिकें, ता पाछे श्रीठाकुरजी के चरण कमल को नमस्कार करत भई ता पाछे विनती करत भई, जो हम तिहारी हैं । तिहारी आज्ञा बिना निकुंज की रचना देखन को गईं, बहुत प्रकार ढूंढ्यो परन्तु निकुंज द्वार पायो नहीं । सो ताहीतें सब तिहारी शरण आई हैं । तब श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी सो प्रसन्न होयकें कहें, जो तिहारी प्यारी हैं, ताते मोकों हू अत्यन्त प्रिय हैं । ताहीते इनको न्यारी न्यारी निकुंज दियो चाहिये । तब तुमसों विहार होय । तब श्रीठाकुरजी कहें जो सगरी मेरी प्यारी हैं, और तिहारे अंगते प्रगट भई हैं, सो ताहीतें तिहारे सम्बन्धतें बहुत ही हमको प्रिय हैं । सो यह बात तुमको बहुत ही उचित है जो अपनो होय ताको ठिकानो दीयो चाहिये । तब श्रीठाकुरजी और श्री स्वामिनीजी उठिकें ठाढ़े भये सो परस्पर गलबाँही दिये हैं, सो प्रेम सो मत्त होयकें दोऊन के नेत्र कमल घूमि रहे हैं, सो मंद मंद गजराज को चाल करिकें निकुंज के द्वार आवत भये । सो तहाँ पुलिंदी आदि उनके दर्शन पाय नयन सफल किये सो वन में श्रीगिरिराजजी के आसपास सों पुलिंदी को श्रीठाकुरजी के संग अंग की शोभा देखिकें साक्षात् मन्मथ के मन्मथ हैं सो अलौकिक कामदेव उत्पन्न होत भयो । तब युगल स्वरूप के चरण कमल को कुमकुम ठौर ठौर देखिकें सो रस कुमकुम की पुलिंदी अपने

मुखमें लगात भई ता करिकें सगरे जन की ताप दूरि भई
सो श्रीठाकुरजी के मिलन को सुख होत भयो या मार्ग में
भगवदीय को संग निश्चय कर्त्तव्य है । जो श्रीगिरिराजजी
पुष्टिमार्ग में मुख्य भक्त हैं । तिनको कियौ सब पदार्थ
अंगीकार करत हैं । शिलान पर बैठत हैं कन्दरा में पौढ़त
हैं, सो सिंज्याधर रूप जहाँ जैसो कार्य होय तहाँ तैसो रूप
धारन करि सेवा करत हैं । सो तहाँ युगल स्वरूप ठाड़े होंय
सो सकल श्री स्वामिनीजी को स्वरूपानन्द को अनुभव कराय
जुगल स्वरूप सगरी श्री स्वामिनीजी के अंग में जो कुसुम
की सुगंध हती सो तिनको ताही निकुंज में रहन की आज्ञा
दिये । सो जिनके अंग में रूपे की सुगंध हती सो तिनको
ताही निकुंज में रहन की आज्ञा दिये । सो जिनके अंग में
चम्पा की सुगन्ध हती तिनके चम्पा के फूलन की निकुंज
चम्पा को बन तहाँ सगरे चम्पा के फूलन की शोभा है
सो तिन स्वामिनीन को चम्पकलता नाम हू है, सो या प्रकार
सगरे कुंजन के नाम श्री स्वामिनीजी कहें हैं । सो तैसे ही
कुसमन की सुगन्ध श्री स्वामिनीजी के अंग में है । वैसे ही
कुसुमन के निकुंज में वास दियो है । और ताही भाव की
श्री स्वामिनीजी हैं, और ताही भाव के श्री ठाकुरजी पधरा
हैं । या प्रकार कुसुम सम्बन्धी श्री स्वामिनीजी कोटानिकोटि
हैं । सो तिन सदन की निकुंज बताये हैं । और आगे धा
के निकुंज हैं लोहा-पीतर-कांसी-भरत-रांग-सीसा-जस्त

इत्यादिक के सो तामस निकुंज हैं । फूल की सात्विकी निकुंज है । तथा धातु के तामसी निकुंज तामें श्री स्वामिनीजी कोटानिकोटि है सो जिनको जैसो भाव है । उनकूं वैसोई निकुंज दियो है । सो तहाँ तहाँ श्री स्वामिनीजी के भाव के श्रीठाकुरजी पधराये तिनके मनोरथ पूर्ण किये हैं । सो या प्रकार धातु के सम्बन्धी श्री स्वामिनीजी मनोरथ पूर्ण किये हैं, या प्रकार राजसी निकुंज मणि मुक्तान की अपार है । सो तहाँ राजसी भक्त कोटानिकोटि हैं । सो तिनको तहाँ तैसो भाव राजसी निकुंज में पूर्णता किये हैं । सो तहाँ तैसो वन, वहाँ तैसे ही भाव के श्रीठाकुरजी पधराये हैं । या प्रकार सगरे भक्त राजसी, तामसी, सात्विकी को राखिके पाछे श्री चन्द्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, श्रीकुमारिकाजी ये तीनों यूथपतिन को संग लेकें, श्रीठाकुरजी भीतर पधारत भये । तहाँ प्रथम श्रीयमुनाजी को निकुंज दिये, सो काहेतें जो चारों यूथपति के निकुंज में श्रीयमुनाजी की कृपा होयगी, तब तहाँ श्री स्वामिनीजी के भाव तें श्रीठाकुरजी पधराये हैं । सो ऊपर राजसी तामसी सात्विकी के निकुंज हैं । अब ये चारों यूथपति के निकुंज निर्गुण हैं । सो तासों इन चारोंन के निकुंज में इतनो अधिक भाव है, सो जब इच्छा कुसुमन की होय सो तब माणिक हीरा मणि मोती आदि काचादिक की भाँति भाँति की रचना होय, और श्री स्वामिनीजी की निकुंज में नहीं होय । सो या प्रकार श्रीयमुनाजी की निकुंज के आगे

श्रीकुमारिकान की निकुंज किये हैं । तहाँ कुमारिकान के भावतें श्री ठाकुरजी पधराये हैं और तिनके आगे चलिके श्री स्वामिनीजी प्रसन्न होंय सो अपने ऊपर श्री चन्द्रावलीजी की निकुंज दियौ सो तहाँ श्रीचन्द्रावली के भाव तें श्री ठाकुरजी पधराये हैं । और श्रुतिरूपा कामिनी कोटानिकोटि है । सो तिनको निकुंज में राजसी, तामसी, सात्विकी निकुंज ये सब आय गईं सो अकेली श्री चन्द्रावलीजी की निकुंज भीतर है । सो तैसे ही सोरह हजार अग्निकुमारिका हैं । सो तिनकी निकुंज राजसी, तामसी, सात्विक हैं ।

सो तहाँ अकेली रहत भई विहार करत हैं । श्रीचन्द्रावलीजी के भाव की श्रीचन्द्रावलीजी की आज्ञानुसार कोटानिकोटि सखी हैं, सो सगरी श्री स्वामिनीजी की सब सेवा करत हैं । ऐसे ही कुमारिका के भावानुसार अनेक दासी हैं । अनेक सखी हैं सो अपनी श्री स्वामिनीजी जानि कुमारिकान की सेवा करत हैं । सो या प्रकार तीनों यूथपति श्री स्वामिनीजी को निकुंज दिये हैं । पाछें मुख्य श्री स्वामिनीजी को निकुंज दिये हैं । पाछें मुख्य श्री स्वामिनीजी और श्री गोवर्द्धनधरजी आगे पधारे, तहाँ अनिर्वचनीय निकुंज हैं । तहाँ ये श्रीपुरुषोत्तम भाव नाहीं है । वहाँ तो सब मात्र पशुपक्षी सगरे स्त्री रूप हैं । तहाँ निकुंज मन तथा वाणी के अगोचर हैं, सो कह्यो नहीं जात है, तहाँ अनेक अंग के अपने भावानुसार तें सखी प्रगट किये हैं, सो तिनके

नाम ललिता, विशाखा आदि हैं । सो जगत में प्रसिद्ध ललिता विशाखा हैं, सो गोपन की बेटी हैं, तिनको निकुंज राजसी, तामसी, सात्विकी आदि में हैं । तहाँ अनेक निकुंज हैं, तिनको सगरो जगत भजन करत है । अब भीतर के गायके जो श्री स्वामिनीजी और श्री गोवर्द्धनधर कहें हैं । स्वरूप मन वाणी के अगोचर हैं ।

जहाँ श्री स्वामिनीजी अपने अंग तें कोटानिकोटि सखी प्रगट कीनी हैं । तिनके नाम ललिता विशाखा आदि हैं, तिहार में अत्यन्त चतुर ललिता है । तासों नाम ललिता है, या है है सखी जाकी रीत विपरीत में सबन में परम चतुर हैं । और विशाखा यह नाम कहत हैं, यहाँ भीतर को स्वरूप जब सारस्वत कल्प आवे तब पूर्ण श्री गोवर्द्धन श्रीनन्दरायजी के घर प्रगट होय तब पूर्ण श्रीचन्द्रावलीजी पूर्ण श्री यमुनाजी पूर्ण कुमारिका पूर्ण ललिता विशाखा आदि सखी सगरी बाहर के निकुंज को अग्निकुमारिका जो नित्य सगरे जगत में गावत हैं सो प्रसिद्धि मात्र हैं । सो प्रगट होय पूर्ण के अंश कलारूप लीला करत हैं ।

जो सारस्वत कल्प में श्री पूर्ण पुरुषोत्तम की आज्ञा प्रकाश को लीला अंश कला में अवतार लीना है सो तहाँ ब्रह्मादिक शिवादिक इन्द्रादिक पुष्प वर्षावत हैं, और लीला को दर्शन करत हैं । श्री पूर्ण पुरुषोत्तम लीला को दर्शन करत हैं । श्री पूर्ण पुरुषोत्तम लीला में ब्रह्मादिक को ज्ञान

होय नाहीं, सो उनही के मन वाणी के अगोचर सो तहाँ पूर्ण पुरुषोत्तम के अंग रस रूप आदि दैविक हैं। सो ब्रह्मादिक शिवादिक प्रगट होय हैं। सो प्रभुन की स्तुति करिकें अलौकिक फूलन की वर्षा करत है सो तिनको लीला मन वाणी सों आवे नाहीं ताते अंशकला के अवतार की लीला सो तिनही को पूर्ण जानिकें भाव सहित भजन स्मरण करें सो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला की प्राप्ति होय।

जैसे श्री यमुनाजी विराजें हैं, तिनकों पूर्ण जानि स्मरण करनों — सेवा करनो इनही की कृपा तें इनही पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला के योग्य होय, ऐसे ही श्री वृषभान कुँवरि ने श्री नंदनन्दन को भजन स्मरण किये सो सारस्वत कल्प के पूर्ण जानिके करे। तो पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला में प्राप्त हुई। सो या प्रकार श्री आचार्यजी महाप्रभुजी के निकुंज, श्री गुसाँईजी के निकुंज सगरे निकुंजन के भीतर हैं। सो श्री आचार्यजी कहें हैं। (वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुज) अपार निकुंज तो तहाँ अपार श्री ठाकुरजी हैं। तहाँ सगरे निकुंज में प्रभु न्यारे न्यारे भक्तन के संग दानलीला, विहारलीला, रासलीला, वाललीला आदि सबही करत हैं। या प्रकार सो सगरी निकुंज को भाव जाननो।

॥ इति निकुंज भावना सम्पूर्ण ॥

श्रीगिरिराजजी के आठद्वार तिनको भाव

श्री गिरिराजजी में आठ द्वार हैं । तहाँ अष्टसखा अष्ट सखी होय एक ही रूप लीला के साधक हैं, सो अष्ट प्रहर रहत हैं । सो अष्टछाप पुष्टिमार्ग में भगवदीय हैं, सो मुख्य है । सो रासरी लीला सारस्वत कल्प के श्री पूर्ण पुरुषोत्तम के अनुभव को पान किये हैं । सो चारों यूथपति मुख्य श्रीस्वामिनीजी, श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावली जी, श्री राधा रानीजी सो इनको भाव लीला बुद्धि अनुसार वर्णन करत हैं ।

॥ इति श्री गिरिराजजी के आठ द्वारन को भाव सम्पूर्ण ॥

श्री श्रुतिरूपा कुमारिका को भाव

अब श्रुतिरूपा कुमारिका के साधन करिकें सिद्ध भई, सो अष्ट प्रहर साधन में तत्पर रहत हैं । सो काहे तें जो तीतर रूप आंपे होयगे, और वेद में श्रुति दोय प्रकार की है, एक पुष्टि दूसरी मर्यादा । तिन दोऊ श्रुतिन में आपस में वाद भयो, सो पुष्टि श्रुति कहे, जो अक्षर ब्रह्म के भीतर कछु भारी पदार्थ है । तब मर्यादा श्रुति ने कही जो सबतें परे अक्षर ब्रह्म है । ताके आगे नेति नेति हमारो ज्ञान नाहीं हैं । तातें और कछु न होयगो । या प्रकार दोऊ श्रुति आपस

में बाद करिके तीतर को स्वरूप धरिकें, उत्कंठित भई, सो अनेक काल लों उड़ी परन्तु कछु देख्यो नाहीं । तब मर्यादा श्रुति को अधिकार नाहीं श्री पुरुषोत्तम की लीला में तातें हार मानिकें पाछी फिर आई । और पुष्टिश्रुति नाहीं फिरी, तब आकाशवाणी द्वारा श्री पूर्ण पुरुषोत्तम बोलत भये । तुम इतनो श्रम करि क्यों उडत हो । तब पुष्टिश्रुति ने कही जो महाराज अक्षर ब्रह्म के भीतर जो पदार्थ है, तिनके दर्शन की चाहना करत हैं । तब दयाकर श्री पूर्ण पुरुषोत्तम ने दर्शन दियो । और कहें – "जो हम व्यापी वैकुण्ठ हैं, तहाँ विराजें हैं । वहाँ तोकों हमारी लीला को दर्शन होयगो ।"

तब पुष्टिश्रुति इती व्रज नदी श्री यमुनाजी हैं । तिनके किनारे बैठत भई, इतने में व्रजभक्त घर घर में श्रृंगार करिकें कोई सोने की गागरि, कोऊ जड़ाऊ की भरन के मिस व्रज नदी पै आईं, सो बड़ी भीर ता समय श्री ठाकुरजी आये । काहू की गागरि फोरी, काहू की डोरी । काहू की नदी में डारि दीनी । काहू को आलिंगन दीयो । या प्रकार लीला कीनी । ता पाछे व्रजभक्तन को अन्तर्ध्यान करिकै अकेले श्री ठाकुरजी पुष्टि श्रुति के निकट आवत भये, और कहत भये, जो तुमने मेरे भक्तन की लीला देखी या समान और कछु नाहीं है । तासों हों तिहारे ऊपर बहुत प्रसन्न भयो हूँ । तासों तुम कछु वर माँगो । यह वचन सुनिकें पुष्टिश्रुति रोम रोम प्रफुल्लित भई, तब बोली – हे महाराज ! तिहारे भक्तन

के सग लीला देखिकें हमको सामग्री भाव होत भयो, सो तासों हे प्रभू ! तुम हम पै प्रसन्न भये हो तो हमको यह वरदान दीजे जो जैसे ब्रजभक्तन के संग लीला विस्तारि उनको सुख दीनों तैसें हमहूँ को मिलिकें रमण करो । यह सुनिकें श्री ठाकुरजी ने कही जो तुमको अबही लीला की योग्यता नाहीं है । काहे तें तुम ब्रज भक्तन के बराबर सुख माँग्यो तासों उनकी बराबरि तो मैं हूँ नांहीं, सो तुमको यह अन्तराय भयो, सो ब्रजभक्तन के चरण की दासी होय मांगते तो अबही लीला की प्राप्ति होती तासों हों तिहारे ऊपर बहुत प्रसन्न भयो हूँ । अब मैं कहूँ सो तुम उपाय करो । मैं सारस्वत कल्प में अपने भक्तन सहित ब्रज में प्रकट होऊंगो । सो तहाँ तुमहू गोपन की भार्य्या होओगी तहाँ शरद ऋतु में रास श्री वृन्दावन में करेंगे । तब तुमहू को मुरली द्वारा बुलावेंगे । सो तुम अब तपस्या करो । या प्रकार कहिकें श्रीठाकुरजी अन्तर्ध्यान भये । तब पुष्टि श्रुति हृदय में बड़ो ताप कियो जो हम महा अभागी हैं । जो ब्रज भक्तन की बराबरि सुख माँगे, अब ब्रजभक्तन के चरणकमल को ध्यान करि तपस्या करन लगीं । तब सारस्वत कल्प आयो तब पुष्टिश्रुति गोप भार्या भई, तिनको रास में श्री ठाकुरजी नें अंगीकार कियो, और मर्यादा श्रुति भई तिनसों श्री बलदेवजी रास रमण किये । या प्रकार श्रुतिरूपा साधन करिकें सिद्ध भई ।

॥ इति श्रुतिरूपा कुमारिकान को भाव ॥

अथ अग्नि कुमारिकान को भाव

अग्नि कुमारिका को यह भाव है, जब ब्रह्मा बेटी के पीछे दोर्‌यो तब वीर्य गिर्‌यो, तासों अग्निकुमारिका की यह रीति है । जो सोलह हजार ऋषि प्रगट होत भये । सो श्री ठाकुरजी के मिलिवे के लिये तपस्या बहुत काल पर्यन्त कीनी । सो श्री रामचन्द्रजी वन में पिता की आज्ञा तें पधारे, तब सोलह हजार ऋषिन को दर्शन दिये, और आज्ञा दिये जो तुमने तपस्या बहुत भारी कीनी है । तासों तुम वांछित वर माँगि लेहु । तब ऋषि बोले जो महाराज ! हमको तिहारे श्रीअंग की शोभा देखिकें रमण करिवे की इच्छा भई है । सो हमसों रमण करो यह माँगत हैं । कामिनी भाव प्रगट होंय, तासों, हम स्त्री होंय और तुम हमारे पति होउ और हमसों रमण करो । यह सुनिकें श्री रामचन्द्रजी बोले, जो यह हमारो अवतार मर्यादा को है, तासों एक पत्नीव्रत धारण कियो है । जब सारस्वत कल्प होयगो तब तुम गौड़ देश में कन्या रूप सों प्रगट होउगी, तब तुम श्री नंदरायजी के घर जाय अपनो मनोरथ पूर्ण करोगी । या प्रकार श्री रामचन्द्रजी के वचन सुनि ऋषि फेरि तपस्या करन लागे । सारस्वत कल्प में गौड़ देश में कन्या प्रगट होंय तब प्रभुन के अर्थ कात्यायनी देवी के मिस श्री यमुनाजी को पूजन कियो सो प्रभु विचारि लीला करि वरदान दिये, जो हम तुमको रास में अंगीकार करेंगे । या प्रकार अग्निकुमारिकान को अंगीकार भयो सो यह

पुष्टिमार्गीय अंतरंगी भक्तन के अर्थ नित्य सेवा को प्रकार वर्णन कियो ।

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत अग्निकुमारिकान को भाव सम्पूर्ण

आभरण की भावना

कुलह उत्सव पाग श्री स्वामिनीजी को मनोरथ मुकुट गवाल करगाथे, टोपी श्रीयशोदाजी को मनोरथ चीरा श्री यमुनाजी को मनोरथ, तनियाँ परदनी धोती सूथन छिप्यो सोरथ पिछोड़ा सो श्री स्वामिनीजी की उत्तरी काछिनी को लहंगा उपरतें कसूमल लहंगा ताके ऊपर सूथन श्री स्वामिनीजी की चोली । उत्सव के दिन अभ्यंग श्रृंगार सामग्री श्री स्वामिनीजी के मनोरथ की नित्य नूतन और श्री स्वामिनीजी सखी को मनोरथ, सो श्री स्वामिनीजी पधराये सो युगल स्वरूप के श्रृंगार में श्री चन्द्रावलीजी कुमारिका सखी आदि श्री सबमें, शाकघर श्री यमुनाजी की कन्दरा, शाकघर के द्वार पै श्री पुलिन्दीजी को स्मरण । शाकघर फूललें प्रगट्यो सो फूल श्री स्वामिनीजी की नासिका के सुगन्ध तें प्रगट्यो । खासा भंडार श्रीललिताजी के कुण्ड उपरतें प्रगट्यो । रसोई घर सखड़ी के ठिकाने श्रुतिरूपा, अनसखड़ी कुमारिका, ततैहरा श्री यमुनाजी रत्न कुंज के मध्य में कमलचौक व्रजमध्य श्री यमुनाजी को पुलिन, पान श्री राधिकाजी को कपोल सुपारी श्री कुमारिका के कुच, चूना श्रुतिरूपा के दन्त, खैर श्री यमुनाजी को अधर ।

॥ इति आभरण की भावना सम्पूर्ण ॥

पंजीरी को भाव तथा सामग्री की भावना

जीरा श्रुतिरूपा, सोंठ कुमारिका अजवाइन ललिता, धनिया विशाखा, समस्त सखी श्री यमुनाजी को स्नेह, घृत बूरा अधरामृत तथा श्री यमुनाजी मिरच छोटी, बून्दी कुमारिका के कुच, बून्दी के लड्डवा श्री स्वामिनीजी के कुच, ताते उत्सव में मुख्य सेव के लड्डआ । चून के मगद के सो दोऊ श्री चन्द्रावलीजी के बेसन के, धांस के श्री यमुनाजी के बेसन के श्री ललिताजी के चौरीठा के दूतोजन के, मूंग के श्री चन्द्रावली के खोवा के श्री यमुनाजी के मनोहर श्रुतिरूपा के, घी स्नेह, बूरा अधरामृत सों बांधे । सुगन्ध श्रीअंग घेवर श्रुतिरूपा को उरस्थल जलेबी श्रुतिरूपा को अधर गूंजा श्री स्वामिनीजी की मूठी, कंगूरा दन्तरूप तथा कंठ कंगूरा आभूषण में, गूंझा श्री यमुनाजी को कुच, खरमण्डा श्री स्वामिनीजी को उदर पपची कुमारिका के कुच ।

षट् ऋतु को भाव

सो वसन्त और धेतु की अरुणाई । कुज में फूली तासों गुलाल प्रगट भयो । सो कमल श्रीहस्त की झांई वसन्तरूप नवपल्लव भयो, नखक्षत तें केशु के फूल खूब भये । सो

केशन की झांई ते चित्र विचित्र झारी प्रगटी । सो नेत्रन के अरुण स्नेह श्याम कटाच तें तथा श्री यमुनाजी तें चोवा बनत में हास्य विनोद उदीपन भाव करि पाछे विहार या प्रकार युगल स्वरूप कुंज में लीला करत हैं । सो क्षण हू न्यारे नाहीं होत । कबहू निंद्रा तें दोऊ स्वरूप झलकत हैं । और युगल स्वरूप कहाँ है, जहाँ लों दूसरे स्वरूप की स्थिति को भान होय इतने में विरह ताप होत है ।

आगे कुंज में ग्रीष्म ऋतु फैलत है । सो अत्यन्त ताप के उपजावी है । चंदन, अर्गजा, गुलाब जल सों सखीजन शीतलता करत हैं । सो अर्गजा, चंदन, केशरि अंग के रूप गुलाब जल सों सुरति श्रम ले छिरकत हैं । याहू करिके दूसरे स्वरूप को ज्ञान होय । ताप मिटे । दन्तावलीन सों मोतीन की माला प्रगटी । अनेक रंग के महल चौवारे आभरण तें प्रगटे । सो लीलारस के आधिक्य तें ग्रीष्म में हू श्रम रूप झरना झरत हैं । सो पन अधरामृत को पान, विरह स्वांस की लू ते कुंज-सगरी तप्त होत हैं । सो वृक्षन के पात सगरे सूख जात हैं । सो सगरी वस्तु में उष्णता होत है । और वर्षा ऋतु को फल है, सो विरह पाछे-रस बहुत है, सो नील घनश्याम प्रभु के स्वरूप की आभा श्री स्वामिनीजी के अंग सों ग्रथित मुक्तावली तें बक पंक्ति मुरली के नाद तथा श्री स्वामिनीजी के राग तथा सखीजन के गान तें कोयल मोर दादुर झींगुर अनेक ध्वनि प्रगट भई, प्रभु को नृत्य देखि मोर नृत्य करत हैं । सो सगरी सखीन पर तथा सगरे वन में युगल स्वरूप अमृतकटाक्ष करत हैं । सो वर्षा वर्षावत हैं ।

ता पाछे अनेक फुलवारी व्रज-भक्तन की शोभा रूप फूलत है । सो सगरी वन विरह रूपी ग्रीष्म ते सूखे हते सो रसपान करि हरित होत भये । ता करिकें श्री स्वामिनीजी रूपवती प्रभु को स्वरूप तमाल रूप तहाँ वेष्टित भई । सो यह वर्षा ऋतु को प्रकार कहत हैं । सो कहुँ युगल स्वरूप महल के ऊपर विराजत हैं । सो श्री स्वामिनीजी के मुखारविन्द रूप चन्द्रम की उजियारी दशों दिशान में महारसरूप फैलात है ।

तैसे ही श्री आचार्यजी कृति अनेक किरण रूपता करिकें निर्मल आकाश भयो । सो प्रभुन को अंग महाश्याम घन आकाश है । परन्तु श्री स्वामिनीजी के मुखचन्द्र करिकें आकाश श्री अंग प्रभुन को होत है । सो जैसे शरद ऋतु के अनुसार श्री स्वामिनीजी के केश हू आकाश रूप हैं । ता करिके परम शोभायमान रात्रि होय रही है । सो शरद की तहाँ वेणु फूलन सों गुही है । तहाँ अनेक मोती हीरा हार आभूषण अनेक प्रकार सों छोटे बड़े तारा मण्डल शोभा देत हैं । सो श्रीमुख ते नासिका में स्वांस चलत हैं । तासों शीतल सुगन्ध वायु चलत है । सो अलौकिक चन्द्रमा पायके कमल कमोदनी सखी अनेक स्वामिनीजी फूल रई हैं । सो मोतीन की माला सोहीं सुन्दर सरोवर भरि रहे हैं । तथा अनेक यूथपतिन को रासमण्डल व्रज में होत है । सो भाव करिकें भोग धरत हैं । ताते शीतकाल में सामग्री नाना प्रकार की मन्दिर में होत हैं ।

॥ इति षट् ऋतु को भाव सम्पूर्णम् ॥